04- जीवन की पथरीली जमीन तक का कविता संसार

05- बकौल अंबेडकर संविधान की सफलता जनमत पर निर्भर

A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 14 अप्रैल, 2024

06- 45 मिनट तक जिला अस्पताल अंधेरे में डूबा

07- 'हीरामंडी' से 14 साल बाद फरदीन खान की वापसी

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 21 अंक 217 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

प्रतिबिंब : राजस्थान की प्रख्यात राजसमंद झील

फोटो: पंकज शर्मा

ईरान ने भारत आ रहे 'इजरायली' जहाज पर किया कब्जा

तेहरान (एजेंसी)। ईरान ने इजरायल के साथ चल रहे युद्ध जैसे हालात के बीच यूएई से भारत आ रहे जहाज एमएससी एरिस पर कब्जा कर लिया है। ईरान की तसनीम न्यूज एजेंसी ने शनिवार को बताया कि ईरानी नौसेना के कमांडो ने इजरायल के साथ संबंध के आरोप में भारत आ रहे इस जहाज पर कब्जा किया है। यह पूरी घटना स्ट्रेट ऑफ होर्मूज में हुई है। इस घटना के वीडियो में नजर आ रहा है कि हेलीकॉप्टर से आए ईरानी सेना के कमांडो ने इस जहाज पर कब्जा कर लिया। इस जहाज पर पुर्तगाल का झंडा लगा हुआ था और यह लंदन की एक कंपनी जोडियाक मेरिटाइम से जुड़ा है। जोडियाक ग्रुप इजरायली अरबपति इयाल ओफेर का है।

बताया जा रहा है कि इस जहाज का चालक दल

भारतीय है और 17 के आसपास संख्या बताई जा रही है। जोडियाक ग्रुप ने इस पूरी घटना पर टिप्पणी करने से इंकार कर दिया है। एमएससी एरिस को आखिरी बार शुक्रवार को दुबई के तट पर देखा गया था और होर्मूज स्ट्रेट की ओर बढ़ रहा था। इस जहाज ने अपने ट्रैकिंग डेटा को बंद कर दिया था जो इस इलाके से गुजर रहे इजरायल से जुड़े जहाजों के लिए सामान्य बात है। इससे पहले ब्रिटिश मिलिट्री से जुड़े संगठन ने भी इस हमले की पुष्टि की थी। चालक दल के एक सदस्य को यह कहते हुए सुना गया कि बाहर मत आओ। इसके बाद ईरानी सेना के और ज्यादा कमांडो जहाज पर उतर आए। एक कमांडो को झुककर बंदूक ताने हुए देखा गया जो अन्य कमांडो को कवर दे रहा था। बताया जा रहा है कि यह हेलीकॉप्टर ईरानी अर्धसैनिक बल रिवोल्यूशनरी गार्ड के द्वारा इस्तेमाल किया जाता है जो पहले भी जहाजों पर धावा बोल चुकी है। ईरानी नौसेना ने यह कार्रवाई ऐसे समय पर की है जब ईरान और इजरायल के बीच युद्ध जैसे हालात बने हुए हैं। ईरानी हमले के खतरे को देखते हुए अमेरिका ने बड़े पैमाने पर युद्धपोत भी इस इलाके में तैनात कर रखा है। ईरान ने कहा है कि अगर अमेरिका इजरायल की मदद करता है तो उसे भी निशाना बनाया जाएगा। इस बीच ईरान की सरकारी मीडिया ने माना है कि सेना के कमांडो ने स्ट्रेट ऑफ होर्मूज में एक कार्गो शिप पर कब्जा किया है। बताया जा रहा है कि यह जहाज यूएई से भारत के मुंबई बंदरगाह पर जा रहा था। कमांडर को मार गिराने के बाद से ही दोनों देशों में तनाव है।

भारतीय चालक दल भी मौजूद, खंभात की खाड़ी में भारी तनाव

सुप्रभात

छुट्टी मनाते गाँव के बच्चे

ताला पड़ा होता है जब स्कूलों में
वे ज्यादा खुश होते हैं

खुली छत के नीचे जीवन के गीत गाते हैं

उनकी उछल कूद
जैसे पूरी लंका में आग लगाने को बेताब
उत्साह के एवरेस्ट पर झंडा लहराते
कि बस अभी छलांग जाएंगे हिमालय.

जश्न के पहले
पटाखों की आवाज की तरह
फूटते हैं उनकी प्रसन्नता के गुब्बारे
किसी ख़ास वजन की नहीं होती खिलखिलाहट
उनकी
जाना पहचाना कोलाहल किसी बालगीत-सा
गूंजता रहता है यहाँ-वहाँ.

पानी से भरे तालाब में
सतह पर उछलती पत्थर की कत्तल
एक छोर से तेज गति से ऐसे सनसनाती है
जैसे कोई मिसाइल दागी गयी हो शत्रु पर
दुश्मन भी छुट्टी मनाने आता है दूसरे किनारे.

सैकड़ों आम पेड़ पर ऐसे
जैसे निशाने की दूकान पर
गुब्बारे सजे हों मीनाबाजार में
सही निशाना गुलेल का
मिठास घोल देता है
एकाग्रता का सबक सीखते बच्चों में.

विज्ञापनों से रिश्ते जोड़ने की तरह ही
कठिन होता है तय करना
कि बबलू पिता बनेगा
और पिंकी निभाहेगी घरवाली की भूमिका
जो सबसे छोटा होता है
उसे तो बच्चा ही बनना होता है खेल में भी
जिम्मेदारी निभाने का सबसे पुराना पाठ दुहराते हुए
याद करते हैं 'घर' की परिभाषा.

पुस्तकें सोई रहती हैं जब गहरी नींद में
सपनों और सच को जीते हुए
जीवन की किताब पढ़ते हैं
छुट्टियां मनाते गाँव के बच्चे.

शहर में भी रहते हैं गाँव के कुछ बच्चे
शिविरों में जाना बस में नहीं जिनके
चले जाते हैं
अमराइयों में छुटियाँ मनाने।

- ब्रजेश कानूनगो

आतंकवादियों का कोई नियम नहीं तो हम क्यों नियम से चलें

जयशंकर की टेरर पर दो-टूक,कहा-2014 के बाद से विदेश नीति में हुआ बदलाव

नई दिल्ली/पुणे (एजेंसी)। विदेश मंत्री एस जयशंकर अपनी बात को स्पष्ट रूप से रखने के लिए जाने जाते हैं। देश हो या विदेश, बिना लागलपेट के बोलना उनकी आदत है। इस बार जयशंकर ने आतंकवाद पर दो टूक शब्दों में कहा कि 2014 के बाद से भारत की विदेश नीति में बदलाव आया है और आतंकवाद से निपटने का यही तरीका है। उन्होंने कहा कि आतंकवादी नियमों से नहीं खेलते तो फिर पलटवार नियमों के तहत कैसे होगा।

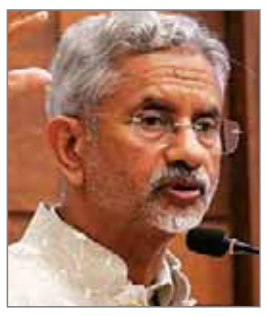

एस जयशंकर पुणे में 'भारत क्यों मायने रखता हैः युवाओं के लिए अवसर और वैश्विक परिदृश्य में भागीदारी' शीर्षक से एक कार्यक्रम में शामिल हुए थे। कार्यक्रम में उन्होंने मौजूद युवाओं से भी बातचीत की। विदेश मंत्री जयशंकर से कार्यक्रम के दौरान पूछा गया कि भारत को किन देशों के साथ संबंध बनाए रखना मुश्किल लगता है। जयशंकर ने कहा कि एक, पाकिस्तान पड़ोस में है और इसके लिए केवल हम ही जिम्मेदार हैं। 1947 में पाकिस्तान ने कश्मीर पर हमला किया था। देश के विदेश मंत्री ने बताया कि 1947 में, पाकिस्तान ने कश्मीर पर हमला किया था। भारतीय सेना ने उनका मुकाबला किया और भारत में विलय हो गया।

राजनाथ के बाद अब दोनों बेटों को मोर्चे पर उतारेगी बीजेपी

क्षत्रिय मतदाताओं को लामबंद करने की तैयारी! पार्टी बना रही घेरा

गाजियाबाद (एजेंसी)। गाजियाबाद लोकसभा से बीजेपी प्रत्याशी अतुल गर्ग को रिकॉर्ड वोटों से जिताने के लिए पार्टी संगठन ने पूरी ताकत झोंक दी है। आसपास के कई जिलों में बीजेपी के विरोध में हो रही क्षत्रिय समाज की बैठकों का असर गाजियाबाद में न हो, इसके मद्देनजर पार्टी कोई रिस्क लेने को तैयार नहीं है। यही कारण है कि नामांकन वाले दिन रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की सभा कराई गई और फिर 6 अप्रैल को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के रोड शो में मौजूदा सांसद वीके सिंह को भी शामिल किया गया। इसी कड़ी में राजनाथ सिंह के दोनों बेटों पंकज सिंह और नीरज सिंह को प्रचार में उतारने की तैयारी है ताकि यहां के क्षत्रिय मतदाताओं

को बीजेपी के पक्ष में किया जा सके। गाजियाबाद के मौजूदा सांसद समेत कई सीटों से क्षत्रिय समाज के दावेदारों के टिकट कटने से विरोध है।

वंदे भारत जैसी ही सुविधा किराया राजधानी से भी कम

● अब 50 अमृत भारत ट्रेनें चलाने की तैयारी कर रहा रेलवे

नई दिल्ली (एजेंसी)। रेलवे बोर्ड ने चालू वित्तीय वर्ष में आम रेल यात्रियों के लिए 50 अमृत भारत ट्रेनें चलाने का फैसला किया है। सभी ट्रेनों में स्लीपर-जनरल कोच होंगे। केसरिया रंग की इन अमृत भारत ट्रेनों को पुल-पुश तकनीक से 130 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार पर दौड़ाया जाएगा। औसत गति अधिक होने के कारण यह ट्रेनें राजधानी एक्सप्रेस से भी कम समय लेंगी। इनके कोच में सुविधाएं मेल-एक्सप्रेस से बेहतर होंगी। रेलवे बोर्ड के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि चालू वित्तीय वर्ष (2024-25) में अमृत भारत ट्रेनों के कुल 1230 कोच का उत्पादन करने का फैसला किया गया है। इसमें स्लीपर श्रेणी (एलडब्ल्यूएससीएच) के 600 कोच, जनरल श्रेणी (एलडब्ल्यूएस) के 440 कोच और गार्ड-स्लीपर श्रेणी (एलएसएलआरडी) के 130 कोच का उत्पादन किया जाएगा। इस प्रकार वित्तीय वर्ष में कुल 50 अमृत भारत ट्रेनों को चलाया जाएगा और इनके कोच स्लीपर-जनरल होंगे। यानी अमृत भारत आम रेल यात्रियों की ट्रेनें होंगी। अधिकारी ने बताया कि वर्तमान में दो अमृत भारत ट्रेनें आनंद विहार-अयोध्या और दिल्ली-दरभंगा के बीच चलाई जा रही हैं।

मुख्यमंत्री मोहन यादव कांग्रेस पर बरसे, बोले-

जिन्होंने रामलला का आमंत्रण ठुकराया, उन्हें जनता ठुकराएगी

अनूपपुर/रीवा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को कहा कि कांग्रेस ने आजादी के बाद 70 से अधिक वर्षों तक देश में राज किया। देश-प्रदेश में कांग्रेस की सरकार होने के बावजूद गरीबों, आदिवासियों को पक्के मकान बनाकर नहीं दिए। इतना ही नहीं आजादी के बाद से अब तक हम सबके आराध्य भगवान श्रीराम गर्भग्रह में प्रवेश नहीं कर सके। इसका कलंक भी कांग्रेस के माथे पर ही रहेगा। कांग्रेस के पास 70 वर्षों के पाप और कलंक धोने का अच्छा मौका था। इन्होंने उसे भी ठुकरा दिया। यदि कांग्रेस श्रीरामलला मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा के आमंत्रण को स्वीकार करती और कार्यक्रम में शामिल होती तो भगवान श्रीराम इनके सारे पाप और कलंक धो देते, लेकिन कांग्रेस की तो

किस्मत ही खराब है। वह अपने पाप और कलंक धोना ही नहीं चाहती, इसलिए भगवान ने भी उसकी बुद्धि हर ली है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को शहडोल लोकसभा की पुष्पराजगढ़ विधानसभा के ग्राम करपा, रीवा लोकसभा की सिरमौर विधानसभा के डभोरा और सतना लोकसभा की चित्रकूट विधानसभा के बरौधा में आयोजित जनसभाओं को संबोधित किया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने नौगांव में रोड शो भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यह चुनाव सामान्य चुनाव नहीं है। यह चुनाव यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश को आगे बढ़ाने का चुनाव है, देश की खुशहाली का चुनाव है, श्रीरामलला के गर्भगृह में मुस्कुराने का चुनाव है।

कांग्रेस ने हमेशा श्रीराम के लिए अड़ंगा लगाया

मुख्यमंत्री ने कहा कि कांग्रेस के लोगों ने भगवान श्रीराम के मामले में हमेशा से अड़ंगे लगाए। उन्होंने कोर्ट में भी भगवान श्रीराम के बारे में प्रश्न चिन्ह खड़े किए। अगर राम को गायब कर दोगे, तो शबरी माता का किस्सा कहां से आएगा? कांग्रेस ने हमारे देवी-देवताओं को नकारने का काम किया। 22 जनवरी के दिन मंदिर बनाने वालों ने कांग्रेस के सारे पाप माफ कर दिए, लेकिन नहीं आने वालों में एकमात्र पार्टी कांग्रेस का नाम है। जो भगवान श्रीराम को ठुकराएंगे, जनता उन्हें ठुकराएगी, आप हमारे भगवान का अपमान करोगे और फिर हमसे वोट की कामना करोगे। ये दोनों बातें नहीं चलेगी। इस पाप के लिए कांग्रेस और उसके राष्ट्रीय अध्यक्ष माफी मांगे कि हमने भगवान श्रीराम का निमंत्रण ठुकराकर गलती की थी।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c

न्यूनतम 26°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 14 अप्रैल 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

छठा दिवस

स्वरूप कात्यायनी

सूक्ष्म जगत जो अदृश्य, अव्यक्त है, उसकी सत्ता मां कात्यायनी चलाती हैं। वह अपने इस रूप में उन सब की सूचक हैं, जो अदृश्य या समझ के परे है। मां कात्यायनी दिव्यता के अति गुप्त रहस्यों की प्रतीक हैं।

प्रियंका बोलीं-हमारे परिवार ने देश के लिए खून दिया

देहरादून (एजेंसी)। प्रियंका गांधी ने शनिवार को उत्तराखंड के रामनगर में जनसभा को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने कहा, हमारे परिवार ने देश के लिए खून दिया। ये मेरे परिवार को कितनी भी गालियां दें, मेरे शहीद पिता का अपमान करें, लेकिन हम चुप रहते हैं, क्योंकि ये हमारे संघर्ष को नहीं समझते। हम चुप रहते हैं, क्योंकि इस देश के लिए आस्था और सच्ची श्रद्धा हमारे दिल में है। हमारी सरकार आई तो अग्निवीर योजना को खत्म करेंगे। प्रियंका ने कहा कि मोदी जी, जो टीवी, मंच और होर्डिंग पर दिखते हैं। वह नहीं हैं, जो आप समझ रहे हैं। आपने 10 सालों से परखा है। चुनाव के समय आपका एक ही सवाल होना चाहिए। आपके जीवन में तरक्की आई है या नहीं हिंदू धर्म में आस्था का सबसे बड़ा प्रमाण त्याग होता है। मैंने 19 साल की उम्र में अपने पिता का शव अपनी मां के सामने रखा है। मैं शहादत और त्याग को समझती हूं। ये मेरे परिवार को कितनी भी गालियां दें, मेरे शहीद पिता का अपमान करें, लेकिन हम चुप रहते हैं, क्योंकि ये हमारे संघर्ष को नहीं समझते।

केजरीवाल की अर्जी पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई आज

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल की अर्जी पर सुप्रीम कोर्ट सोमवार को सुनवाई करेगा। केजरीवाल को ईडी ने दिल्ली के आबकारी घोटाला मामले में मनी लॉन्ड्रिंग के आरोप में गिरफ्तार किया था। केजरीवाल अभी न्यायिक हिरासत के तहत तिहाड़ जेल में बंद हैं। उन्होंने अपनी गिरफ्तारी के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस संजीव खन्ना और जस्टिस दीपांकर दत्ता की बेंच इस मामले में केजरीवाल की अर्जी पर सोमवार यानी 15 अप्रैल को सुनवाई करेंगे। इससे पहले केजरीवाल ने गिरफ्तारी के खिलाफ दिल्ली हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। हाईकोर्ट ने 9 को केजरीवाल की अर्जी खारिज कर दी थी जिसके बाद उन्होंने सुप्रीम कोर्ट का रुख किया।

इजरायल-ईरान संकट पर और गहराया जंग का खतरा!

अमरीका ने भी कर ली तैयारी, तैनात कर दिए युद्धपोत

तेहरान (एजेंसी)। मिडिल-ईस्ट में तनाव एक बार फिर से चरम पर है। आशंका है कि ईरान 24 घंटे के भीतर इजरायल पर हमला कर सकता है। इसे देखते हुए इजरायली सरकार भी अपनी तैयारियों में जुटी हुई है। खुफिया सूत्रों के हवाले से बताया जा रहा है कि ईरान की जवाबी कार्रवाई रविवार तक हो सकती है। माना जा रहा है कि तेहरान की ओर से इस अभूतपूर्व हमले से युद्ध छिड़ सकता है। दरअसल, ईरान अपनी एक इमारत पर घातक बमबारी के बाद जवाबी हमले की तैयारी में है। मगर, इसे लेकर इजरायल का दावा रहा कि वह उसके हितों के खिलाफ खतरों से जुड़ी थी। तेहरान की ओर से बदला लेने की चेतावनी के बीच, अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने इजरायल को भरपूर समर्थन देने की बात कही है। रिपोर्ट के

मुताबिक, यूएस ने इजरायल और अमेरिकी बलों की रक्षा के लिए अतिरिक्त मिलिट्री असेट्स भेजी है। नौसेना के एक अधिकारी ने बताया, 2 नौसेना विध्वंसक जहाजों को पूर्वी भूमध्य सागर में भेजा गया है। इनमें से एक यूएसएस कार्नी है, जो लाल सागर में हूती ड्रोन और एंटी-शिप मिसाइलों के खिलाफ हवाई रक्षा कर रहा था। साथ ही, यूएस ने इस क्षेत्र में शत्रुता पर लगाम लगाने की कोशिशों को दोगुना कर दिया है। इसके लिए ईरान के मित्र देशों से भी बातचीत चल रही है। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने भी इसे लेकर इजरायल को चेतावनी दी है। उन्होंने कहा कि ईरान के जल्द ही हमला करने की आशंका है। मगर, उन्होंने ऐसा न करने की अपील भी की। बाइडन ने एक कार्यक्रम के बाद संवाददाताओं से कहा,मैं पूरी तरह से सत्यापित जानकारी तो नहीं दे रहा, मगर आशंका है कि जल्द से जल्द ऐसा हो सकता है। अमेरिकी राष्ट्रपति से पूछा गया कि इजरायल पर हमला करने को लेकर ईरान को उनका क्या संदेश क्या है। इस पर बाइडन ने कहा, ऐसा मत करो। सूत्रों ने कहा कि ईरान गाजा पट्टी में युद्धविराम सहित अपनी मांगें पूरी होने तक इससे पीछे हटने वाला नहीं है।

यह भी कहा कि ईरान परमाणु कार्यक्रम पर बातचीत फिर से शुरू करना चाहता है। ईरान अमेरिका से यह आश्वासन भी चाहता था कि वह नियंत्रित हमले की स्थिति में शामिल नहीं होगा, जिसे अमेरिका ने कथित तौर पर खारिज कर दिया है। गौरतलब है कि गत 1 अप्रैल को इजरायल ने सीरिया के दमिश्क में ईरानी दूतावास के कांसुलर एनेक्सी पर हवाई हमला किया। हमले से इमारत नष्ट हो गई। ईरान के इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कोर ने कहा कि हमले में 2 कमांडर सहित उसके सात सदस्य मारे गये हैं। इसके बाद ईरान ने इजरायल के खिलाफ जवाबी कार्रवाई करने की कसम खाई है।

देश के लिए समाधान नहीं समस्या है कांग्रेस: योगी

कहा-भ्रष्टाचार,आंतकवाद,नक्सलवाद,सब कांग्रेस की ही देन

सीएम योगी बोले-यूपी में बदमाशों की जगह जेल या जहन्नुम

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कांग्रेस समाधान नहीं समस्या की पार्टी है। कहना था कि भारत की आजादी के बाद से कांग्रेस ने देश के लिए अनेक समस्याएं खड़ी की हैं। कहा कि भ्रष्टाचार, आंतकवाद, नक्सलवाद, जातिवाद आदि मुद्दे कांग्रेस पार्टी की ही देन है। कांग्रेस के कार्यकाल पर उंगली उठाते हुए सीएम योगी ने कहा कि अयोध्या विवाद भी कांग्रस की ही देन है। लोकसभा चुनाव के दौरान उत्तराखंड के हल्द्वानी में जनसभा को संबोधित करते हुए सीएम योगी ने कहा कि कांग्रेस हमेशा से ही तुष्टीकरण की राजनीति करते हुए आई है। कांग्रेस पर जमकर प्रहार करते हुए सीएम योगी ने कहा कि सर्जिकल स्ट्राइक पर कांग्रेस ने सवाल खड़े किए थे, जो बहुत ही शर्मनाक बात है। चाहे तीन तलाक की बात हो या फिर जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटाने की बात हो, कांग्रेस ने हमेशा से ही सवाल खड़े किए हैं।

ऑस्ट्रेलिया के सिडनी में मॉल में चाकूबाजी,6 की मौत

सिडनी (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलियाई शहर सिडनी के एक शॉपिंग मॉल में शनिवार को चाकूबाजी की घटना सामने आई। इसमें 6 लोगों की मौत हो गई। जबकि 9 महीने के बच्चे समेत कई गंभीर रूप से घायल हो गए। रिपोर्ट के मुताबिक पुलिस की फायरिंग में हमलावर भी मारा गया। घटना वेस्टफील्ड बॉन्डी जंक्शन शॉपिंग मॉल की है। असिस्टेंट कमिश्नर एंथनी कुक ने बताया, संदिग्ध हमलावर मॉल में स्थानीय समयानुसार दोपहर 3 बजकर 10 मिनट (भारतीय समयानुसार सुबह 10.30 बजे) पर घुसा। इसके बाद वह कुछ देर के लिए बाहर गया और फिर 3 बजकर 20 मिनट पर वापस आकर लोगों पर हमला कर दिया। इस दौरान लोगों ने गोलियों की आवाज भी सुनी। सिडनी के पुलिस कमिश्नर एंथनी कुक ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा,हमलावर अकेले ही मॉल में घुसा था। उसके साथ कोई और व्यक्ति नहीं था। हमलावर से जुड़ी कोई जानकारी फिलहाल सामने नहीं आई है। हमले की वजह के बारे में भी फिलहाल नहीं पता है। टीम जांच कर रही है। हमले की जानकारी मिलते ही मॉल पहुंची पुलिस टीम में एक महिला अफसर भी थी।

बेंगलुरु ब्लास्ट में एनआईए ने किया बड़ा खुलासा

कोलकाता में खुद की पहचान बदलकर रह रहे थे दोनों आरोपी

हिंदू नामों से बना रखी थी आईडी,आतंकी गतिविधियों शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। बेंगलुरु के रामेश्वरम कैफे में हुए विस्फोट के 42 दिन बाद आखिरकार एनआईए को बड़ी सफलता मिली। एनआईए ने मामले में मुख्य साजिशकर्ता समेत दो आरोपियों को शुक्रवार को गिरफ्तार कर लिया। आरोपियों में ए मथीन अहमद ताहा और मुसव्विर हुसैन शाजिब शामिल हैं। शाजिब ने कैफे में विस्फोटक रखा था। वहीं, ताहा विस्फोट की योजना बनाने और उसे अंजाम देने का मुख्य साजिशकर्ता है। इन दोनों लोगों को कोलकाता के पास से गिरफ्तार किया गया। एनआईए के इस ऑपरेशन में केंद्रीय खुफिया एजेंसियों और पश्चिम बंगाल, तेलंगाना, कर्नाटक तथा केरल की राज्य पुलिस एजेंसियों ने मिलकर काम किया। इससे पहले एनआईए ने इन आरोपियों की सूचना देने वाले को 10 लाख रुपये का इनाम रखा था। अब इन आरोपियों की गिरफ्तारी के बाद कई महत्वपूर्ण जानकारियां सामने आने की उम्मीद है। शुरुआती जानकारी के अनुसार आरोपियों के पास से हिंदू नाम समेत कई अन्य फर्जी आईडी रखे जाने की बात सामने आई है। शहर की एक अदालत ने शुक्रवार को बेंगलुरु कैफे विस्फोट मामले में दो आरोपियों को तीन दिन की ट्रांजिट रिमांड पर भेज दिया। कोर्ट ने एनआईए को आरोपियों को आगे पूछताछ के लिए कर्नाटक की राजधानी ले जाने की अनुमति दे दी। शहर की सेशन कोर्ट के चीफ जज ने एनआईए के अनुरोध पर उसे ट्रांजिट रिमांड की अनुमति दे दी। एनआईए ने कहा कि आरोपियों अब्दुल मतीन अहमद ताहा और मुस्सविर हुसैन शाजिब को कोलकाता से करीब 190 किलोमीटर दूर पूर्व मेदिनीपुर जिले के दीघा कस्बे में एक होटल से गिरफ्तार किया गया था। गिरफ्तारी के बाद पेशी से पहले आरोपियों को मेडिकल जांच के लिए बिधाननगर राजकीय सामान्य अस्पताल ले जाया गया। अब्दुल मथीन ताहा और मुसाविर हुसैन शाज़िब दोनों, जो सह-अभियुक्त माज मुनीर अहमद के साथ पहले के आतंकी मामलों में भी शामिल थे। ताहा और शाजिब कर्नाटक के शिवमोग्गा जिले के तीर्थहल्ली के निवासी हैं। ताहा एक आईटी इंजीनियर है, जबकि शाजिब पर आईएस का प्रमुख व्यक्ति है।

अब बीएचटी रिपोर्ट खोलेगी मुख्तार की मौत का राज

मुख्तार के परिजन न आए न सही, जांच की रफ्तार फिर भी तेज

बांदा (एजेंसी)। माफिया डॉन मुख्तार अंसारी के मौत के मामले की जांच कर रही न्यायिक जांच कमेटी के सामने, मुख्तार के परिजनों ने अब तक कोई बयान दर्ज नहीं कराया। लेकिन जांच की रफ्तार तेज होती जा रही है। जांच टीम को मेडिकल कॉलेज की बीएचटी भी मिल गई है। जिसके जरिए पता लगाया जा सकेगा कि 26 व 28 मार्च को इलाज के दौरान किन बीमारियों का इलाज किया गया और किन-किन डॉक्टरों ने इलाज किया। बेड हेड टिकट को बीएचटी कहा जाता है। इसमें मुख्तार को 26 मार्च को अस्पताल में भर्ती किए जाने से लेकर 28 की रात उसकी मौत तक किए गए इलाज का पूरा ब्यौरा दर्ज है। इसी से साफ हो सकेगा कि 26 मार्च को मुख्तार की हालत 14 घंटे के इलाज के बाद आखिरी इतनी ठीक कैसे हो गई कि उसे आईसीयू से अस्पताल के किसी वार्ड या जेल के अस्पताल में रेफर करने की जगह सीधे तन्हाई वाली बैरक भेज दिया गया। इसमें इस बात का भी जिक्र है कि आईसीयू से भेजते वक्त मुख्तार के साथ कौन-कौन सी दवाइयां भेजी गईं। सूत्रों के अनुसार न्यायिक कमेटी की जांच अधिकारी अपर न्यायिक अधिकारी गरिमा सिंह 2 दिन पहले रानी दुर्गावती मेडिकल कॉलेज अपनी टीम के साथ गई थीं।

बीजेपी आज संकल्प पत्र जारी करेगी, पीएम मोदी मौजूद रहेंगे

- मेनिफेस्टो में पार्टी उन्हीं वादों को शामिल करेगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा लोकसभा चुनाव 2024 के लिए रविवार को संकल्प पत्र जारी करेगी। दिल्ली स्थित भाजपा हेडक्वार्टर में चुनावी मेनिफेस्टो जारी करने के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा, गृह मंत्री अमित शाह और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह भी मौजूद रहेंगे। प्रधानमंत्री मोदी ने चुनावी मेनिफेस्टो के लिए 25 जनवरी 2024 को जनता से सुझाव मांगे थे। पार्टी को अब तक 15 लाख से ज्यादा सुझाव मिले। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, नमो ऐप के माध्यम से 4 लाख और वीडियो के माध्यम से 11 लाख सुझाव मिले हैं। पार्टी सूत्रों के मुताबिक, भाजपा के घोषणा पत्र का विषय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर फोकस के साथ 'मोदी की गारंटी' विकसित भारत 2047' होगा।

तेजस के एडवांस्ड वर्जन मार्क-1 ए की खरीद का टेंडर हुआ जारी

वायुसेना 97 फाइटर जेट खरीदेगी, यह किसी भारतीय कंपनी को मिला सबसे बड़ा डिफेंस ऑर्डर

नई दिल्ली (एजेंसी)। रक्षा मंत्रालय ने 97 एलसीए मार्क-1ए फाइटर जेट की खरीद के लिए हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड को 65 हजार करोड़ रुपए का टेंडर जारी किया है। यह स्वदेशी फाइटर जेट तेजस का एडवांस्ड वर्जन है। भारत सरकार की ओर से किसी स्वदेशी मिलिट्री हार्डवेयर एचएएल को दिया गया यह अब तक सबसे बड़ा ऑर्डर है।

रक्षा मंत्रालय ने कंपनी को जवाब देने के लिए तीन महीने का समय दिया है। सरकार ने 2021 में भी तेजस के लिए कंपनी को ऑर्डर दिया था। मार्क-1ए में उससे ज्यादा एडवांस्ड एवियोनिक्स और रडार हैं। ये वायुसेना को मिग-21, मिग-23 और मिग-27 के बेड़े को बदलने में मदद करेगा। एचएएल को 2021 में भारतीय वायुसेना के लिए 83 तेजस मार्क-1ए बनाने के लिए 46,898 करोड़

रुपए का कॉन्ट्रैक्ट मिला था। कंपनी के पास मार्च 2024 से फरवरी 2028 के बीच 83 एयरक्राफ्ट की डिलीवरी करने का समय है। कुछ जेट्स की डिलीवरी अगले कुछ हफ्तों में होने की उम्मीद है।

अच्छी पहल

- यहां डोली में बैठकर वोट डालने जाएंगे गर्भवती,बुजुर्ग और दिव्यांग
- 10 हजार मीटर की ऊंचाई पर पोलिंग बूथ,यहां पैदल जाना मुश्किल

मुश्किल हालात में भी उत्तराखंड में वोटिंग कराएगा 'ईसी'

देहरादून (एजेंसी)। लोकतंत्र के महापर्व में गर्भवती महिलाओं की शतप्रतिशत भागीदारी कराने के लिए निर्वाचन और स्वास्थ्य विभाग ने पूरी तैयारी कर ली है। उत्तराखंड में गर्भवती महिलाएं पैदल नहीं बल्कि डोली में बैठकर वोट डालने जायेंगी। स्वास्थ्य विभाग ने हरिद्वार और ऊधमसिंह नगर को छोड़कर अन्य जिलों में गर्भवती महिलाओं के लिए डोली सुविधा उपलब्ध कराने का निर्णय लिया है। इनके अलावा 85 वर्ष से अधिक आयु के बुजुर्गों और दिव्यांग मतदाताओं को मतदान स्थल तक पहुंचाने के लिए भी डोली की व्यवस्था करने के आदेश दिए गए हैं। मतदान करने से कोई एक भी मतदाता ना चूके इसके लिए निर्वाचन विभाग पूरी तरह से कमर कसे हुए है।

उत्तराखंड के दुर्गम स्थानों पर बने मतदान स्थलों तक गर्भवती महिला मतदाताओं को ले जाना या पहुंचाना बेहद चुनौतीपूर्ण कार्य है। मैदानी क्षेत्रों में तो गर्भवती महिलाओं के लिए कोई दिक्कत नहीं है लेकिन दुर्गम क्षेत्रों में कई ऐसे मतदान स्थल हैं जो या तो बेहद ऊंचाई पर हैं या पैदल दूरी बहुत ज्यादा है। जैसे उत्तरकाशी में गंगोत्री विधानसभा क्षेत्र में पांच नंबर मतदेय प्रदेश स्थल सिंचाई भवन गंगोत्री पुरी 10,170 फीट की ऊंचाई पर है। इसी तरह से बद्रीनाथ विधानसभा क्षेत्र के बद्रीनाथ में 10 हजार फीट की ऊंचाई पर कलगोठ मतदेय स्थल है। चमोली में बद्रीनाथ विधानसभा क्षेत्र में ही डुमक मतदेय स्थल 20 किलोमीटर दूर है। गोपेश्वर से सड़क मार्ग की दूरी 55 किलोमीटर की है। रुद्रप्रयाग के केदारनाथ विधानसभा क्षेत्र में त्रिजुगीनारायण मतदेय स्थल की ऊंचाई 7608 सीट है। कुनैन मतदेय स्थल 5600 फीट की ऊंचाई पर स्थित है।

परिक्रमा

लोकसभा चुनाव: राजनेताओं के बीच तीखी होती जुबानी जंग

अरुण पटेल

जैसे-जैसे देश व प्रदेश में लोकसभा चुनाव का प्रचार अभियान गति पकड़ता जा रहा है वैसे-वैसे राजनेताओं का एक-दूसरे पर फब्ती कसने का सिलसिला शनैः-शनैः सघन होता जा रहा है और उनके बीच जुबानी जंग भी तीखी होती जा रही है देखने वाली बात यही होगी कि आगे चलकर यह और कितनी तीखी होगी है तथा शब्दों की मर्यादा किस सीमा तक तार-तार होती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ऊधमपुर में बिना नाम लिए राहुल गांधी और लालू यादव परिवार पर जमकर निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि विपक्षी लोग मुगलिया सोच से हमारी आस्था और श्रद्धा पर नवरात्रि व सावन माह में नानवेज और मटन का वीडियो डालकर बार-बार प्रहार करते हैं। हमारा संविधान किसी को कुछ भी खाने से नहीं रोकता लेकिन ये लोग सावन माह में मटन बनाकर उसकी नुमाइश करते हैं और वीडियो प्रसारित करना तथा नानवेज खाने का वीडियो बनाकर देश के लोगों को चिढ़ाते हैं, यह मंशा ठीक नहीं है। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह का कहना है कि हिंदुओं की बजाय यूपी से गुंडे पलायन कर रहे हैं। जबकि भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा छिंदवाड़ा और सीधी में कांग्रेस पर निशाना साधते हैं और कहते हैं कि 'बदल गया जमाना बदल डालो छिंदवाड़ा।' उनका कहना है कि विपक्षी पार्टियां सिर्फ परिवार को आगे बढ़ाने में लगी हैं, ऐसे में परिवार की पार्टियों को घर बिठाना है। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव कहते हैं कि यह चुनाव छिंदवाड़ा को परिवारवाद की बेड़ियों से मुक्त कराने का है। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी का आरोप है कि शिवराज सिंह चौहान की राजनीति खुद को सज्जन इंसान के रुप में प्रस्तुत करने की रही है लेकिन उन्होंने दूत भेजकर कांग्रेस उम्मीदवार प्रतापभानु शर्मा को खरीदने की कोशिश की है। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने आरोप लगाया है कि ईडी, सीबीआई और आईटी केन्द्र के राजनीतिक हथियार हैं, लेकिन भारत में विचारधारा की लड़ाई चल रही है। एक तरफ स्वतंत्रता व समानता की विचारधारा है तो दूसरी तरफ आरएसएस और मोदी हैं।

राजस्थान के बाड़मेर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इंडिया गठबंधन जिसे वे इंडी गठबंधन कहते हैं पर आरोप लगाया है कि ये परमाणु हथियार खत्म करना चाहते हैं। कांग्रेस के शहजादे हिंदू धर्म की शक्ति का विनाश करने की बात करते हैं। उनका आरोप था कि इंडी गठबंधन के दल देश से परमाणु हथियार खत्म करना चाहते हैं, उन्होंने कहा कि मैं पूछना चाहता हूं कि आप किसके इशारे पर काम कर रहे हैं जो भारत को शक्तिहीन करना चाहता है। आखिर किसके दबाव में आपका गठबंधन हमारी परमाणु ताकत को खत्म करना चाहता है। तामिलनाडु के तिरुनेलवेली में 12 अप्रैल शुक्रवार को चुनावी सभा में राहुल गांधी ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी खुद चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति करते हैं, कांग्रेस के बैंक खाते फ्रीज कर दिये गये, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल गिरफ्तार कर लिये गये तथा विपक्षी नेताओं को धमकी दी जा रही है।

उन्होंने कहा कि भारत में कई भाषायें, संस्कृति व इतिहास है और हमारे लिए सब बराबर और जरुरी हैं। हालांकि मोदी कहते हैं कि एक देश, एक नेता और एक भाषा होनी चाहिये, इसी बात की लड़ाई है। तमिल, बंगाली और देश की दूसरी भाषाओं के बिना भारत पूरा नहीं हो सकता। राहुल का आरोप था कि भाजपा के नेता खुलेआम कहते हैं कि अगर वे फिर से सत्ता में आये तो संविधान बदल देंगे। प्रधानमंत्री मोदी को केवल इस बात की परवाह है कि इस देश के वित्त व संचार प्रणाली पर उनका एकाधिकार रहे। पहले पूरी दुनिया भारत को लोकतंत्र का प्रकाश स्तंभ कहती थी, वे आज कहते हैं कि भारत का लोकतंत्र अब लोकतंत्र नहीं रहा। राहुल ने युवाओं को ट्रेनिंग देने और 30 लाख पदों पर नौकरियां देने का वायदा किया।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा ने सीधी और छिंदवाड़ा में चुनावी सभाओं को संबोधित करते हुए पहली बार जातिगत जनगणना को लेकर भाजपा का पक्ष जनता के सामने रखते हुए कहा कि हम जातिगत जनगणना के खिलाफ नहीं है, लेकिन कांग्रेस समाज को बांटने के लिए इसकी मांग कर रही है। भ्रष्टाचार के मुद्दे पर इंडिया गठबंधन की घेराबंदी करते हुए नड्डा ने जनता से पूछा क्या लालू, राबड़ी यादव, सोनिया गांधी व राहुल गांधी बेल पर नहीं हैं, क्या अरविन्द केजरीवाल, हेमंत सोरेन, मनीष सिसोदिया जेल में नहीं हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के जमाने में पनडुब्बी घोटाला, चीनी घोटाला, चावल घोटाला, कॉमनवेल्थ घोटाला, कोयला घोटाला, हेलीकाप्टर वेस्टलैंड घोटाला, टू-जी, थ्री-जी के घोटाले हुए। कांग्रेस ने न अंतरिक्ष छोड़ा, न धरती छोड़ी, न पाताल छोड़ा, तीनों लोकों में घोटला किया। इंडी गठबंधन में सभी भ्रष्टाचारी एक जगह इकट्ठे हो गये हैं।

आदिवासियों को साधती भाजपा और संघ

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मिशन 400 पार के लक्ष्य को पूरा करने के लिए भारतीय जनता पार्टी ने मध्यप्रदेश की सभी 29 लोकसभा सीटों को जीतने का लक्ष्य निर्धारित किया है। अपने इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए भाजपा आदिवासी सीटों पर फोकस कर रही है और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के स्वयं सेवकों ने मोर्चा भी संभाल लिया है, उसके अनुषांगिक संगठन भी सक्रिय हो गये हैं। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए भाजपा आदिवासी बहुल सीटों पर ज्यादा ध्यान दे रही है। इसका कारण यह है कि 2023 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने आदिवासी बहुल विधानसभा सीटों पर भाजपा को कड़ी टक्कर दी थी। इन परिस्थितियों में अब भाजपा का पूरा ध्यान आदिवासी मतदाताओं को साधकर जीत का रिकार्ड बनाने का है। 2014 व 2019 के लोकसभा चुनावों में भले ही भाजपा ने अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की सभी 10 सीटें जीत ली थीं लेकिन कांग्रेस ने अनुसूचित जनजाति की सीटों पर भाजपा को कड़ी चुनौती पेश की थी।

और यह भी

मध्यप्रदेश का छिंदवाड़ा लोकसभा क्षेत्र एक ऐसा क्षेत्र है जहां कांग्रेस का दबदबा रहा है और 1977 के बाद केवल एक उपचुनाव हुआ जिसमें कमलनाथ को प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री सुंदरलाल पटवा ने पराजित कर दिया था। इसके अलावा सभी चुनाव कांग्रेस ने ही जीते। यहां तक कि जब पूरे हिंदी भाषी क्षेत्र में कांग्रेस को केवल 2 सीटें मिली थीं जिनमें से एक छिंदवाड़ा थी, जो कि कांग्रेस के उम्मीदवार गार्गीशंकर मिश्रा ने जीती थी। इससे इस बात का अंदाजा लगाया जा सकता है कि इस सीट पर कांग्रेस की कितनी मजबूत पकड़ रही है। लेकिन 2024 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी नकुलनाथ को चक्रव्यूह में उलझाने की भाजपा ने पूरी-पूरी तैयारी कर ली है, अब देखने वाली बात यही होगी कि नकुलनाथ इस चक्रव्यूह को भेद कर 2024 में लोकसभा पहुंच पाते हैं या नहीं। प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री रहे कमलनाथ ने अमरवाड़ा-धनोरा में चुनावी सभाओं में कहा कि किसी भी क्षेत्र की उन्नति के लिए आवश्यक है कि लक्ष्य निर्धारित कर उसे हासिल किया जाए और इसके लिए निरंतर कार्य किया जाये। मैंने दिल से काम किया और रिश्ते निभाये हैं। अब चुनौती युवाओं के रोजगार की है, इस पर सरकार ध्यान नहीं दे रही है। भाजपा सरकार को निशाने पर लेते हुए कमलनाथ कहते हैं कि वे सपने दिखाते हैं तो वहीं दूसरी ओर घोटाला कर भविष्य को अंधकार में डाल देते हैं।

लेखक सुबह सवेरे के प्रबंध संपादक हैं।
संपर्क-
09425010804
07999673990

भोपाल की मस्जिद में गूंजा 'मोदी है तो मुमकिन है'

लोगों ने अबकी बार 400 पार लिखे पोस्टर लहराए

भोपाल। चुनाव की तारीखें नजदीक आती जा रही हैं। इसके साथ ही राजनीतिक उत्साह भी बढ़ता जा रहा है। भोपाल की एक मस्जिद में बीजेपी प्रत्याशी आलोक शर्मा की उपस्थिति में 'हर-हर मोदी, घर-घर मोदी' के नारे गूंज उठे। बोहरा समाज ने मस्जिद में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पोस्टर लगाए गए। मामला भोपाल की अलीगंज हैदरी मस्जिद का है, जहां पीएम मोदी के समर्थन में नारे लगे। बोहरा समुदाय के लोगों ने 'हर-हर मोदी, घर घर मोदी' के नारे लगाए। मस्जिद के अंदर मोदी के पोस्टर भी लगे हैं। साथ ही, उन्होंने 'मोदी है तो मुमकिन है' के नारे भी दिए। बोहरा समाज ने 'अबकी बार 400 पार' का नारा भी लगाया। इस दौरान बीजेपी प्रत्याशी आलोक शर्मा उनके बीच मौजूद थे। मस्जिद के आमिल जौहर अली ने प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की तारीफ की। उन्होंने कहा कि हम उनकी सफलता की कामना करते हैं। उनसे हमारे घर जैसे रिश्ते हैं। बता दें कि भोपाल संसदीय सीट पर बीजेपी के पूर्व महापौर आलोक शर्मा और कांग्रेस के अरुण श्रीवास्तव के बीच मुकाबला है।

भोपाल में 7.5 मिमी बारिश, टूटा 30 साल का रिकॉर्ड

अप्रैल महीने में 1.7 इंच बारिश हो चुकी, ऑल टाइम रिकॉर्ड भी बना

भोपाल। भोपाल में शुक्रवार-शनिवार की रात में रुक-रुककर 7.5 मिमी बारिश हुई। इतना पानी गिरते ही अप्रैल महीने में बारिश का 30 साल पुराना रिकॉर्ड भी टूट गया। वर्ष 1994 में अप्रैल में 40.7 मिमी यानी, 1.6 इंच बारिश हुई थी, जबकि इस बार 12 दिन में ही 43.9 मिमी, यानी 1.7 इंच पानी गिर चुका है। मौसम विभाग ने अगले 2 दिन और बारिश होने का अनुमान जताया है। भोपाल में पिछले पांच दिन से आंधी-बारिश का दौर चल रहा है। रोज दोपहर बाद मौसम बदल जाता है। 10 अप्रैल को 24 घंटे में 29.8 मिमी बारिश दर्ज की गई थी। वहीं, शुक्रवार रात 8 बजे बाद बारिश फिर शुरू हो गई, जो देर रात तक जारी रही। शनिवार सुबह 8 बजे तक मौसम विभाग ने 7.5 मिमी बारिश दर्ज की। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार- अप्रैल में 30 साल पुराना रिकॉर्ड टूटने के साथ ऑल टाइम रिकॉर्ड भी बना है, क्योंकि

अप्रैल में पहले कभी इतनी बारिश नहीं हुई है। मौसम विभाग ने रविवार को भी बारिश होने का अलर्ट जारी किया है। हालांकि, सुबह से धूप खिली है, लेकिन दोपहर बाद मौसम बदल सकता है। कहीं-कहीं ओले भी गिरने का अनुमान है। 14 और 15 अप्रैल को बूंदाबांदी होने का अनुमान है, जबकि 16 अप्रैल से मौसम साफ हो सकता है। बारिश के चलते शुक्रवार-शनिवार की रात में टेम्प्रेचर में गिरावट हुई और यह 20.2 डिग्री दर्ज किया गया। मौसम विभाग के अनुसार- 10 साल पहले 20 अप्रैल 2013 को 24 घंटे में 30.8 मिमी यानी, सवा इंच बारिश हुई थी। यह अप्रैल महीने में 24 घंटे के भीतर हुई सर्वाधिक बारिश का रिकॉर्ड है। इसके बाद 2014 से 2023 के बीच कभी भी अप्रैल में इतनी बारिश नहीं हुई। इस बार 10 अप्रैल को 24 घंटे में 29.8 मिमी बारिश हुई। 1 मिमी कम बारिश होने से यह रिकॉर्ड नहीं टूट सका। वर्ष 2014 से 2024 के बीच 8 साल बारिश हुई है। साल 2016, 2017 और 2022 को बारिश नहीं हुई थी, जबकि पिछले साल 22.6 मिमी यानी, पौन इंच से अधिक पानी गिरा था। इस बार भी अप्रैल में बारिश का दौर चल रहा है।

16 को दिग्विजय-शिवराज 19 को भरेंगे नामांकन

दो दिन की छुट्टी के बाद सिंधिया, बरैया भरेंगे पर्चा

भोपाल। प्रदेश में तीसरे चरण के लिए शुरू हुई लोकसभा चुनाव की नामांकन प्रक्रिया अब 2 दिन के अवकाश के बाद सोमवार को शुरू होगी। इस चरण में कांग्रेस और भाजपा के कई दिग्गज चुनाव मैदान में अपना नामांकन दाखिल करेंगे। इनमें पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान, दिग्विजय सिंह, केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया शामिल हैं। पहले दिन नामांकन शुरू होने के बाद छह सीट पर 7 प्रत्याशियों के नामांकन भरे गए हैं। पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान 19 अप्रैल को विदिशा और दिग्विजय सिंह राजगढ़ लोकसभा सीट पर मंगलवार 15 अप्रैल को नामांकन भरेंगे। विदिशा लोकसभा सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी प्रताप भानु शर्मा ने पहले दिन नामांकन भर दिया है जबकि भाजपा से पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान प्रत्याशी हैं। अभी उनके नामांकन की तारीख तय होना बाकी है।

'लोकतंत्र' को 'नोटतंत्र' से खरीदने की कोशिश में नकुल

कैलाश विजयवर्गीय ने छिंदवाड़ा में नाथ परिवार को लपेटा

भोपाल। शहरी प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने नकुलनाथ के आवास की निगरानी की बात की है। विजयवर्गीय छिंदवाड़ा लोकसभा क्षेत्र में भाजपा के प्रभारी हैं। उन्होंने मांग की है कि चुनाव आयोग कांग्रेस उम्मीदवार नकुल नाथ के आवास की जांच करे। नकुल नाथ पर हमला बोलते हुए उन्होंने आरोप लगाया है कि नकुल नाथ 'नोट-तंत्र' के जरिए 'लोकतंत्र' खरीदने की कोशिश कर रहे हैं। गुरुवार को वाहनों की जांच के दौरान, पुलिस ने एक वाहन से 4 लाख रुपये से

अधिक बरामद किए। इसमें स्थानीय ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष गिरीश शाह अन्य पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ यात्रा कर रहे थे। गिरीश शाह अभी फरार हैं। विजयवर्गीय ने आरोप लगाया कि गांव के सरपंचों को नकुलनाथ के आवास पर बुलाया जा रहा है, जहां उन्हें नकदी से भरे लिफाफे दिए जा रहे हैं। विजयवर्गीय ने गुरुवार को कहा कि एक वाहन से 5 लाख रुपये के करीब नकदी बरामद की गई। इसमें स्थानीय कांग्रेस नेता गिरीश शाह यात्रा कर रहे थे।

सिंधिया ने सुनाया बोर्डिंग स्कूल का मजेदार किस्सा

बताया कौन से राजा का बेटा करता था मेरी देखभाल

भोपाल। लोकसभा चुनाव को लेकर गुना लोकसभा के भाजपा प्रत्याशी ज्योतिरादित्य सिंधिया इस बार अलग ही अंदाज में दिखाई दे रहे हैं। अशोकनगर जिले मे सिंधिया ने सिख समाज के सम्मेलन को संबोधित किया और अपने बचपन के दिनों का किस्सा सुनाया। सिंधिया ने कहा कि मैं इस मंच से आपको वोट देने की अपील नहीं करूंगा। बस मैं ये बताने के लिए आया हूं कि मेरा यहां से दिल का रिश्ता है। ज्योतिरादित्य सिंधिया ने इतिहास के पन्नों को पलटते हुए देश में सिख समाज के योगदान के बारे में जानकारी दी। इसके साथ ही सिंधिया ने अपने बोर्डिंग स्कूल में पढ़ाई को लेकर मजेदार किस्सा सुनाया। ज्योतिरादित्य सिंधिया ने बताया कि जब वह बच्चे थे तो बोर्डिंग स्कूल में कौन उनका ध्यान रखता था। अशोकनगर जिले में पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष मालकित सिंह

संधू के फार्म हाउस पर ज्योतिरादित्य सिंधिया ने सिख समाज के सम्मेलन में शामिल होने पहुंचे थे। सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि हमारा और आपका पारिवारिक रिश्ता नहीं बल्कि खून का रिश्ता भी है। सिंधिया ने अपने बचपन के दिनों को याद करते हुए कहा कि मैं आपको बताता हूं जो आपको भी मालूम नहीं है। जब मैं मुंबई की स्कूल में पढ़ता था तब बड़े महाराज और वर्तमान की राजमाता ने निर्णय लिया कि इसकी आदत ठीक नहीं हो रही है। इससे बोर्डिंग स्कूल में भेजो। मुझे बोर्डिंग स्कूल में भेज दिया गया। जब मैं बोर्डिंग स्कूल में गया तो सातवीं क्लास में था। उस समय 11वीं क्लास में पटियाला के टिक्का रजिंदर सिंह, पटियाला महाराज के बेटे की ड्यूटी लगी थी मेरी देखभाल करने के लिए। केंद्रीय मंत्री ने कहा- 'सिख समाज का इतिहास एक बलिदान का इतिहास है, जहां गुरु गोबिंद सिंह जी के चार शाहबजादों ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए बहुत कम उम्र में अपने जीवन का बलिदान दे दिया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की तारीफ करते कहा , गुरु गोविंद सिंह जी के चार साहिबजादों की शहादत की याद में वीर बाल दिवस मनाने की घोषणा हो या अफगानिस्तान से पवित्र गुरु ग्रन्थ साहिब को सुरक्षित वापस लाने का ऐतिहासिक निर्णय हो। यह काम प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया है। सिंधिया ने कहा- नरेंद्र मोदी जी, सिख समाज के मान-सम्मान के लिए सदैव संकलपबद्ध रहे।

अनुराग ठाकुर बोले-नकुल नाथ का चुनाव एक इवेंट

पाढुंर्णा में केंद्रीय मंत्री ने ली सभा, कहा-इस बार होंगे हिट विकेट या क्लीन बोल्ड

भोपाल। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा है कि छिंदवाड़ा सांसद नकुलनाथ छिंदवाड़ा की जनता के भरोसे को हवा में उड़ाकर एंज्वाय करते हैं। नकुलनाथ के लिए चुनाव एक इवेंट है, और छिंदवाडा उनका पसंदीदा पिकनिक स्पॉट है। उनके लिए सांसद पद जिम्मेदारी नहीं एंजॉय का पद है, वे ये नहीं जानते कि एक सांसद के ऊपर पूरी लोकसभा क्षेत्र की जनता की जिम्मेदारी होती है। ठाकुर ने कहा कि सांसद पद लोकसभा क्षेत्र की जनता का भरोसा होता है, जिसे उन्होंने एंजॉय कहकर खो दिया है। इस बार जनता उन्हें एंजॉय करने के लिए यहां की जनता उन्हें सभी जिम्मेदारियों से मुक्त कर देगी। इस बार नकुलनाथ हिट विकेट या क्लीन बोल्ड होंगे। केंद्रीय मंत्री ठाकुर ने ये बातें छिंदवाड़ा लोकसभा क्षेत्र के पाढुंर्णा में कहीं। उन्होंने कहा कि नकुलनाथ ने कह दिया है कि 12 दिन काम कर लो फिर 5 साल एंजॉय करेंगे। नकुलनाथ कभी क्षेत्र की जनता की आवाज नहीं बन सके। वो सिर्फ सांसद बनकर 5 साल एंज्वाय करते हैं। वहीं भाजपा के जनप्रतिनिधि विकास को आगे बढ़ाते हैं, और जनता की सेवा में लगे रहते है। उन्होंने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री

शिवराज सिंह चौहान ने अगस्त 2023 में 24 घंटे में ही पांढुर्णा को नया जिला बनाया। सौंसर स्थित विश्व प्रसिद्ध जामसांवली हनुमान मंदिर में हनुमान लोक का निर्माण किया जा रहा है। ठाकुर ने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री चौहान ने 24 सितंबर 2023 को 314 करोड़ रुपए की लागत से जामसांवली हनुमान मंदिर के हनुमान लोक के निर्माण का शिलान्यास किया था जो शीघ्र ही पूरा हो जायेगा। पहले चरण का निर्माण कार्य 18 महीनों के भीतर पूरा हो जाएगा। ठाकुर ने कहा कि नरसिंहपुर रोड के चार फाटक रेल्वे ब्रिज का विस्तारीकरण की लंबे समय से मांग की जा रही है जो जल्दी ही पूरी हो जाएगी। कोरोना काल के समय से पांढुर्ना में कुछ ट्रेनों के स्टॉपेज बंद हैं जिन्हें फिर से शुरू किया जाएगा। उन्होंने कहा कि रेल सुविधाओं से उद्योग धंधों का विकास होता है और उद्योग धंधों के विकास से रोजगार उपलब्ध होते हैं। ठाकुर ने कहा कि छिंदवाड़ा में राष्ट्रीय स्तर के स्टेडियम की आवश्यकता है, जो आज तक नहीं मिला है। छिंदवाड़ा में टेबिल टेनिस हाल अधूरा पड़ा है, जिसे शीघ्र पूरा किया जाएगा। खेल प्रतिभाओं को उचित प्लेटफार्म मिलना चाहिए इसके लिए सांई जैसे संस्थान के लिए आवश्यक व्यवस्था की जा रही हैं। उधर, टीकमगढ़ में बीजेपी के विधानसभा शक्ति केंद्र और नमो युवा सम्मेलन को संबोधित करते हुए बीजेपी के प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा ने कहा कि पार्टी को लोकसभा चुनावों में जनहितैषी योजनाओं की जानकारी लोगों से संवाद कर घर-घर तक पहुंचाना है। कांग्रेस में इस समय भगदड़ की स्थिति बनी हुई है और हमारी पार्टी में रोज कांग्रेस के बड़े नेताओं से लेकर विभिन्न समाज के प्रतिष्ठित लोगों का आने का सिलसिला जारी है।

किताब

प्रदीप कान्त
समीक्षक

जीवन की पथरीली जमीन तक का कविता संसार

और रोने का रंग
वह तो किसी रंग जैसा होता ही नहीं
क्योंकि जब रोती है तू
रंगों के चेहरे पड़ जाते हैं फीके

(हँसी का रंग हरा होता है)

बच्चे के रोने पर रंगों के भी चेहरे फ़ीके पड़ जाने का यह रूपक कवि की दृष्टि पर चकित करता है जिसे हमारे समय के सुपरिचित कवि हेमंत देवलेकर बुनते हैं। हाल ही में इनका एक कविता संग्रह आया है - हमारी उम्र का कपास। लगभग 71 कविताओं का यह संग्रह दो भागों में विभाजित किया गया है, पहला - समुन्दर बचपन में बादल था (समुन्दर बचपन में बादल ही तो होता है) और दूसरा - लौटना फिर चुके हुए समय में। समुन्दर बचपन में बादल था में बच्चों पर 33 कविताएँ हैं जबकि बाक़ी कविताएँ लौटना फिर चुके हुए समय में।

पहले भाग समुन्दर बचपन में बादल था में एक नैसर्गिक मासूमियत है, जिसमें बच्चों का संसार, उनकी ख़ुशी उनके सपने और विश्वास है। हेमंत के कवि ने इन कविताओं को इस तरह से बुना है कि ये हमे बच्चों के संसार में ले जाती हैं और हमे अपना बचपन याद आने लगता है। और इस से बेहतर क्या हो सकता है कविता जिनके लिए लिखी गई है उन ही के पास पाठक को भी पहुँचा दे। दूसरा भाग यानी लौटना फिर चुके हुए समय में हमारे समय के मनुष्य, समय और समाज का आख्यान है।

समुन्दर बचपन में बादल था में ज़्यादातर कविताएँ किसी ना किसी बच्चे को समर्पित है। ये वो बच्चे हैं जो हर आदमी को मिल सकते हैं और इन बच्चों के नाम वे ही नाम है जो किसी भी बच्चे को पहली बार छूने पर किसी के दिमाग़ में आते होंगे। इनमें से कोई तो कुहू है तो कोई टूटू, टिग्गुल है तो कोई सेमडू। हेमंत का कवि समुन्दर और किताब के बचपन के स्वरूप को ढूँढता है और बच्चे की धरती की परिभाषा गढ़ता है-

समुन्दर बचपन में बादल था
किताब बचपन में अक्षर
माँ की गोद जितनी ही थी धरती बचपन में

हर पकवान बचपन में दूध था
पेड़ बचपन में बीज
चुम्मियाँ भर थी प्रार्थनाएँ बचपन में

(बचपन में)

यहाँ भाषा पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए वे समुद्र नहीं बल्कि आम बोलचाल का समुन्दर लिखते हैं। दूसरी चुम्मियाँ भर प्रार्थनाएँ का प्रयोग हैरत में डालता है कि एक प्रार्थना कितनी निश्छल हो सकती है। बचपन की अलग परिभाषा गढ़ने वाला यह कवि पूछता है - टिम्पुकली तू बड़ी होकर क्या बनेगी? और टिम्पुकली का जवाब कविता में है-

मैं
बनना चाहती हूँ
एक ऐसा पेड़
जिसमें कभी
कोई पतंग न फँसे

(टिम्पुकली तू बड़ी होकर क्या बनेगी?)

ऐसा मेला, जिसमें कोई बच्चा ना बिछड़े, ऐसी नदी जिसमें कोई नाव ना डूबे या ऐसी दुकान जो कभी खिलौनों के दाम ना माँगे, और छुट्टी की घंटी जो मैदान को सुना ना रखें। ऐसी मासूम तामीर तो एक बच्चा ही सोच सकता है बड़ा तो हरगिज़ नहीं। सोचा जाए तो इस कविता का विस्तार बड़ों तक किया जा सकता है, - एक ऐसा समाज जिसमें धर्म या मज़हब के नाम पर खून ना बहे, ऐसी दुनिया जिसमें सीमाएँ ना हों इत्यादि।

एक बच्चे को देखकर किसी के मन में स्नेह ना उपजे ऐसा तो नहीं हो सकता। बस या रेल में सफ़र करता हुआ बच्चा आधा टिकट, आधी सवारी भले ही हो लेकिन लेकिन उसके लिए जगह की कोई कमी नहीं-

हम आधा टिकट
हम आधी सवारी?

गोदी किसी की भी हो
पूरी सीट हमारी
हम पूरी सैर, हम पूरे मज़े
हम आधा टिकट
हम आधी सवारी?

(हम आधा टिकट)

सचमुच, हम भी अगर बच्चे होते, मगर कब तक, समय तो अपनी गति से चलता हुआ हमारी अवस्था को परिवर्तित करेगा ही जो संसार का नियम है। बहुत सारे पड़ोसियों में एक ही बच्चा उल्लास और उमंगें भर देता है, हर कोई उसके साथ खेलना चाहता है और वह पड़ोस ही तो उस बच्चे का संसार है। हेमंत का कवि अपनी एक कविता हर किसी बच्चे को समर्पित करता है और पड़ोस की अलग अलग परिभाषा गढ़ता है-

तेरे जन्म के वक़्त
जितना ज़रूरी था माँ के स्तनों में दूध का उतरना
उतना ही ज़रूरी था पड़ोस

तेरे एक स्तन को छोड़
दूसरे को मुँह लगाने जितना पास
यह पड़ोस
माँ का ही विस्तार है

और यह पड़ोस ही तो है
जो हाँ का हामी है, ना का नहीं

वहाँ तेरी हर इच्छा के लिए 'हाँ' है
जब जब घर तुझे रुलाता
तेरे आँसुओं पौंछने पड़ोस भागा चला आता

(तेरा पड़ोस)

यहाँ राजेश रेड्डी का एक शेर याद आता है-

मेरे दिल के किसी कोने में है एक मासूम सा बच्चा
बड़ों की देखकर दुनिया बड़ा होने से डरता है

दरअसल बचपन में मासूमियत का आकाश जितना एक विस्तार है, उम्र बढ़ने पर यह विस्तार अपनी इच्छाओं और स्वार्थों के संकुचन में बदल जाता है। इसलिए ये भी देखा जा सकता है कि बच्चों के बहाने यह कविताएँ भी बड़ों की विकृत होती जा रही दुनिया की पड़ताल करती हैं -

तू अपना घर पड़ोस को बताती
और पड़ोस पूछने पर अपना घर
बचपन के बाद यह बर्ताव
हम धीरे धीरे भूल क्यों जाते हैं?

(तेरा पड़ोस)

अगर दुनिया केवल श्वेत श्याम होती तो उसकी सुन्दरता कैसी होती? एक अलग किस्म की। किन्तु गिनने को भले ही कुछ हों, प्रकृति ने दुनिया को अनगिनत रंगों से गढ़ा है जो उसे सुन्दर बनाते हैं। मनुष्य के जीवन में भी तो कई रंग होते हैं, सुख के, दुख के, प्रेम के, घृणा के, सद्भाव के, द्वेष के जो उसे कभी सुकून देते हैं तो कभी बेचैन करते हैं। हेमंत का कवि बच्चों की अनुभूतियों को रंगों से उकेरता है-

हँसी का रंग हरा होता है
जहाँ जहाँ भी हरापन है
तेरे ही खिलखिलाने की अनुगूँज है वहाँ

कल्पना का रंग होता है आसमानी
जहाँ तक पसरा हुआ है आसमान
तेरे कल्पना के दायरे में आता है
ज़िद का रंग होता है बहुत गहरा
इतना कि एक बार जिस चीज़ की रट लगा लेती है तू
हमारी किसी भी समझाइश का रंग
चढ़ता ही नहीं उस पर

(हँसी का रंग हरा होता है)

ऐसी ही एक और कविता है - हो-हल्ला, यहाँ हेमंत का कवि शुरुआत करता है

वह चित्र में रंग भर रही है
और रंग बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हैं
अपने बारी आने का

और अंत में आकर कहता है कि सभी रंग बच्चे के चित्र में आना चाहते हैं -

वह चित्र में रंग भर रही है
और हर एक रंग है चाहता
कि वही वही फैला हुआ हो
उस के चित्र में
रंग तो बस उसी का जमा हो
गाढ़ा और चटक

(हो-हल्ला)

कौनसा रंग हो सकता है जो बच्चे के चित्र में अपने आप को ना पाना चाहेगा। लेकिन रंगों के भी अपने अपने अर्थ हैं, बच्चे के चित्र में काला रंग भी सुन्दर लगेगा लेकिन मनुष्य के जीवन की अनुभुतियों में काले या लाल की नहीं, हरे या सफ़ेद या आसमानी की ज़रूरत है। और इसीलिए कवि जग में शांति के कल्पना अलग ढंग से करता है -

तू अगर फ़ौज में भर्ती हो जाए
तो यक़ीन है कि सारी तोपें
पिचकारियों में बदल जाएँगी

फिर उनसे गोला बारूद नहीं दाग़ा जाएगा
रंग बरसाए जाएँगे

सरहदों के उस पार
जहाँ गिरेंगे तेरे रंगीले गुब्बारे
खून ख़राबे के आदी हो चुकी यह धरती
महसूसेगी अपना नया जन्म होते हुए

(डिम्बू टिम के लिए)

काश ऐसा हो सके कि यह दुनिया साम्राज्यवाद से मुक्त हो जाए। कविता कोरी कल्पना नहीं हो सकती, ना शब्दों की जोड़ तोड़ और ना ही महज़ बिंबों, प्रतीकों और रूपकों की एक बुनावट। कविता आपकी कल्पना से उपज ज़रूर सकती है मगर आकार यथार्थ में ही प्राप्त करेगी। हेमंत का कवि बच्चे की कल्पना में भी एक कटु यथार्थ खोजता है-

उसने काग़ज़ पर
एक चौकुट्टा सा
गोला बनाया
और मन में कहा-
'चिड़िया'

फिर उसने
गोले में कहीं
एक बिन्दी मांड दी
और मन में कहा
'आसमान'
सच,
चिड़िया की आँखों में
आसमान
बिंदु भर ही तो होगा

अब इस से बड़ा यथार्थ क्या हो सकता है कि चिड़िया कितनी भी कोशिश कर ले, वह बहुत ऊँचाई तक पहुँच जाएगी जो कि मुहावरे में तो आसमान को छूने जैसा ही होगा पर आसमान वहाँ से भी बिंदु जैसा ही दिखेगा।

कहा जाता है कि कविता परकाया प्रवेश है, अब यहाँ परकाया तो नहीं लेकिन हेमंत का कवि बच्चे की गणित के किताब में प्रवेश कर जाता है और इसके बचपन के खेलने की चीज़ों से गणित के संकेतों को समझने लगता है-

तूने फिसलना भले ही छोड़ दिया हो
पर फिसलपट्टी ने
साथ तेरा नहीं छोड़ा
तेरी गणित की किताब में
वर्गमूल का चिह्न हो गई है वह

(गणित की किताब)

एक साफ़ सुथरा और व्यवस्थित घर किसे अच्छा नहीं लगता लेकिन जिस घर में बच्चे हों और वहाँ कुछ भी फैला बिखरा ना हो तो वह अजीब सा लगता है। हेमंत का कवि घर को बच्चों की मस्ती के नज़रिए से देखता है-

घर की हर चीज़ सलीक़े से रखी हुई है
पर चीज़ें बड़ी उदास है
इस करीनेपन से

वे इन्तज़ार में हैं कि बच्चे आएँ
और सारी सजावट क़तरा क़तरा बिखेर दें
चीज़ें महज़ दिखावटीपन जीना नहीं चाहती

(बच्चों के सोहबत में)

जब चीज़ें महज़ दिखावटीपन नहीं जीना चाहती तो मनुष्य को क्यों दिखावटी होना चाहिए? दरअसल इसमे कहीं ना कहीं हमारी सभ्यता का विकास भी है जो हमें परिष्कृत तो बनाता है किन्तु इसी के साथ एक तरह की कृतिमता भी हमारे भीतर घर करने लगती है। हेमंत की यह कविताएँ यह सोचने पर मजबूर करती हैं कि उनके भीतर का व्यक्तित्व कितना कोमल होगा जो ऐसी संवेदनशील कविताएँ रचता है।

कोई भी व्यक्ति यदि परेशान हो तो क्या करता होगा (और परेशान होगा ही कौन, जो संवेदनशील होगा)? सामान्यतः अपनी रुचि का काम जो उसे सुकून देता है जैसे एक संगीत प्रेमी संगीत की मधुरता में खो जाना चाहेगा। हालाँकि मधुरता की अपनी अपनी परिभाषा हो सकती है लेकिन अगर सवाल उठे कि संगीत से भी मधुर क्या हो सकता है? जवाब के लिए ये पढ़िए -

दुनिया के
किसी भी साज़ के
किसी भी सप्तक से
कोई भी इतना ठंडा
भीगा
और चाशनीदार नहीं
जो सुर
तेरी पप्पी में छिपा है

(रंगपंचमी)

इस कविता संग्रह का शीर्षक है- हमारी उम्र का कपास जो एक कविता के शीर्षक में आकार लेता है- हमारी उम्र का कपास धीरे धीरे लोहे में बदल रहा है। परिवार के लिए काम करते हुए बच्चे इस कविता का विषय हैं-

ये दुआएँ की जाती हैं हमारे बारे में
कि हम कभी बीमार न पड़े
शोर-गुल और धमाका-चौकड़ी मचाते
बेफ़िक्र बच्चे
दिखाई ना दे जाएँ हमे
और स्कूल जाते बच्चों का
हमसे कभी सामना न हो

दूध से भरे कोमल शरीर हमारे
पसीने से लथपथ रहते हैं अक्सर
हमारी उम्र का कपास
धीरे-धीरे लोहे में बदल रहा है
(हमारी उम्र का कपास धीरे धीरे लोहे में बदल रहा है)

इस तरह वे बचपन में ही बच्चों की बाल सुलभ के कोमलता के युवा-अवस्था की कठोरता में बदल जाने का रूपक बुनते हैं।

दूसरे भाग यानी लौटना फिर चुके हुए समय में पहली कविता है - मालगाड़ियों का नेपथ्य। कविता को पढ़कर लगता है कि यदि मालगाड़ियों की तुलना यात्री रेल से की जाए तो रेलगाड़ियाँ मुख्यधारा के नागरिक मानी जा सकती है, जबकि मालगाड़ियाँ पिछड़ा वर्ग-

रेलवे स्टेशन की समय सारणी में
कहीं लिखा नहीं होता उनका नाम
प्लेटफ़ॉर्म पर लगे स्पीकरों को
उनकी की सूचना देना क़तई पसंद नहीं।

लघुकथा

दरवाजे

सुरेश सौरभ

खट खट खट.ऽऽऽ..
दरवाजा किसी ने खटखटाया।
धड़ाकऽऽऽ....दरवाजा खुला।
'राम के नाम से, भगवान के नाम से कुछ दे दे बेटा! कुछ दे दे बाबू!'
खटाक.ऽऽऽ... उसकी तुमड़ी में पाँच का सिक्का डाल दिया उसने।
दरवाजा बंद।
थोड़ी देर बाद फिर। खट खट खटऽऽऽऽ...
दरवाजा खोला।
जय श्री राम, जय श्री राम...ऽऽऽऽऽ.....तमाम तेज आवाजों का रेला। पर्चे हवा लुटाये जा रहे थे। पोस्टर हाथ में लिए लोग लहरा रहे थे। ...जय श्री
राम... जय श्री राम....ऽऽऽऽ..

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी
कला समीक्षक

असफलताओं के बीच जूझता विंसेंट वॉन गॉग

'असफलता ही सफलता की कुंजी है' इस बात से लगभग सभी लोग वाकिफ होंगे। कुछ लोग मानेंगे तो कुछ नहीं मानेंगे। इस मानने न मानने से इतर बस हमें अपने मानने पर भरोसा करते हुए आगे बढ़ना चाहिए। हमें किसी भी परिणाम से इतर बस कार्य पर ध्यान देना चाहिए। हमें कोई भी कार्य खुद से करके उसके अच्छाई एवं बुराई पर विचार करना चाहिए। कलाकार विंसेंट वॉन गॉग असफलता से सफलता की ओर बढ़ने वाला कलाकार हुआ। उपदेश देने से पूर्व श्रोताओं के दुःख दर्द को महसूस करते हुए आगे बढ़ा। जीवनयापन हेतु तमाम संघर्षों के बावजूद निराश ही होता रहा पर आगे बढ़ता रहा। पागल बेवकूफ का तमगा भी मिला, उसी को लिए लगातार आगे बढ़ने के प्रयास में लगा रहा।

25 वर्ष तक लगभग चार से पांच कामों में असफल होने के बाद विंसेंट को बोरिनोज़ के चर्च में मज़दूरों को उपदेश सुनाने का मौका मिल गया साथ में काम भर का वेतन भी। पादरी बन गया था, अस्थाई नियुक्ति मिली थी। असफलता यहां भी साथ नहीं छोड़ी। कड़कड़ाती ठंड में देंह ऐंठ-ऐंठ जा रही थी जिसे गर्म रखने हेतु कोयले की आवश्यकता थी। इंतजाम कैसे होगा? परेशान था वॉन गॉग, जिस हेतु उसे कोयले के पहाड़ी तक जाना था, वो गया भी। काम भर का कोयला मिल तो गया पर वो वहां के संघर्ष से वाकिफ भी हो गया। लाख छुड़ाने के बावजूद भी कोयले की कुछ काली परतें चेहरे पर जमीं रहीं। ऐसी अवस्था में ही उपदेश देना हुआ था पहली बार वॉन गॉग को। सुनने वाले भी दीन, हीन, निरीह, काले कोयले से सने लोग थे। कोयले वाला उपदेशक उन्हें अपने ही बीच का लगा। लोगों का विश्वास वॉन गॉग पर बैठ गया।

ईश्वर, संघर्ष और जीवन जैसे तमाम गूढ़ रहस्यों को बड़े ही साधारण तरीके से समझाने में कामयाब हो गया था वॉन गॉग। बिल्कुल ही प्रवाह के साथ अपने शब्दों को रखते हुए लोगों को खुद से जोड़ पाने में भी सफल हो गया था पर दूसरों को ज्ञान बांटते-बांटते जल्द ही खुद भी गहरे अंधेरे में कहीं खो गया था। खोह में खोये कोयले की भांति। हीरा भी तो ऐसे ही होता है। किसी ने कहा कि अभी आप पूरे बोरिनोज़ को सही से जान नहीं पाये हैं, यहां के लोगों को ज्ञान से ज्यादा रोटी की आवश्यकता है, शरीर के न भरने वाले खोह को पाटने हेतु आलू की आवश्यकता है, दो जून खाने को कुछ मिल सके उसकी आवश्यकता है। ज्ञान बांटने निकले वॉन गॉग के मन में, उपदेशक को भी श्रोताओं जैसा ही होना चाहिए, जैसा भाव था। कोयले के खदान में उतरने के निश्चय के साथ वो आगे बढ़ा। जिनको उपदेश देना है उनके दुखों को पहले समझना होगा। बीती रात को जबरदस्त ठिठुरन रही, बाहर निकलना ही मृत्यु सा भयावह लग रहा था बावजूद इसके लोग भोर में ही ठिठुरते सिकुड़ते अपने काम पर जा रहे थे। वॉन गॉग भी उतर रहा था। दुख पसर कर वॉन गॉग के कलेजे तक उतर गया था। ढेबरी के रोशनी में लगातार खदान के नीचे

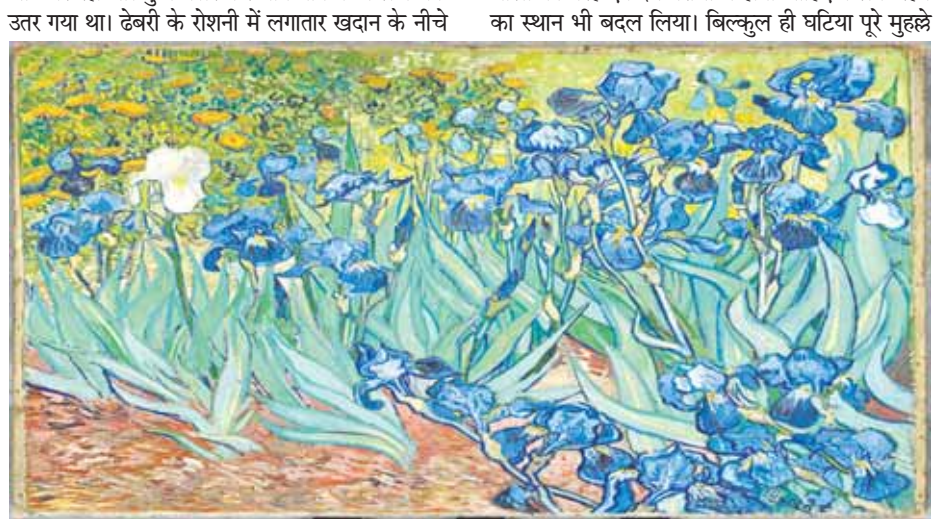

उतरते हुए कई दफा सांसों के उखड़ जाने के एहसास से कांप उठना हुआ पर हार नहीं माना।

वो निरंतर नीचे उतरता गया। मृत्यु सिर पर खड़ी दिखाई पड़ रही थी पर उसका उतरना जारी था। मजदूरों को देखकर हौंसला मिलता रहा। मजदूर काले पसीने से नहाए हुए जान पड़ रहे थे। जमीन काली खेती सी जान पड़ रही थी। थूक भी काली आने लगी थी। दूसरों के चेहरे को देखकर वॉन गॉग खुद के चेहरे का अंदाजा लगा चुका था। संकरी बिल्कुल ही संकरी खोह से उतरते हुए अब वो वाकई बोरिनोज़ को जान पा रहा था।

छोटे बिल्कुल छोटे बच्चों को अपने उम्र से पहले बड़े होते देखना और औकात से कई गुना अधिक कष्टों वाले काम करते देखते हुए दिल पसीज गया उस पसीझते हुए दलदल में। खदान में कमियों का अंबार था, खदान के कभी भी बैठ जाने का खतरा भी था बावजूद इसके भी लोग निरंतर खट रहे थे, पेट और बाल-बच्चों के खातिर।

खदान की दशा देख

अंदर तक सिहर उठा वॉन गॉग। किसी तरीके से जिंदा बाहर आने के बाद एकदम बदलाव सा हो गया था उसके व्यवहार में। छोटे बच्चों के कष्टों को देखकर भी वो तड़प उठ रहा था। खदान में मजदूरों की दशा देखकर उनके बीमार एवं बिलखते बच्चों से मिलने के बाद एकदम से तड़प उठा वॉन गॉग। रहन-सहन बिल्कुल ही बोरिनोज़ वालों की तरह एकदम गरीबी में होना चाहिए फलतः रहने का स्थान भी बदल लिया। बिल्कुल ही घटिया पूरे मुहल्ले के लोगों से भी घटिया जगह लेकर रहने लगा ताकि वहां रहने वाले लोगों को वो अपने बीच का लग सके। खदान के मजदूरों की मजबूरी ठेकेदार तक भी पहुंचाया पर उनकी अपनी मजबूरी मुंह बाये खड़ी थी। बिल्कुल ही आपा खो बैठा था वॉन गॉग। अब तक कलाकार बनने की बात नहीं थी। अभी तक वो एक अच्छा इंसान बनना चाह रहा था पर उसके साथ उसका चाहा कभी नहीं हुआ।

अपने लिए बस जरूरत के कपड़े रखते हुए उसने बाकी बचे कपड़ों को ठिठुरन से कांपते जरुरत मंदो में बांट दिया। दिन भर कोयला बीनता, बीन कर ठंढ से तड़पते बच्चों को गर्म करने हेतु भट्ठियों में जलाने के लिए उनके परिजनों को दे देता और खुद सिकुड़ते हुए जीता। अपनी चारपाई भी बिमार बच्चे को देकर खुद घास पर सोने लगा। वॉन गॉग अपने पिता एवं भाई थियो के निगाह में एक सफल इंसान तो नहीं बन पा रहा था पर खुद के नजर में दूसरों के काम आने वाला एक अच्छा इंसान बन गया था। दर्द के अथाह सागर में गोंता लगा रहा था वॉन गॉग पर खुद को बचाने के स्थान पर दूसरों को उभारते हुए खुद और भी गहरा डूबता जा रहा था। अब तक मिले अपने वेतन को भी इन्हीं गरीबों के देखरेख में लगाता रहा। खुद किसी तरीके से काम भर का खा पा रहा था।

एक दिन कोयला बीन ही रहा था कि अंदर से बाहर को बेतरतीब भागती हुई बहुत सारी आकृतियां उसको दीख पड़ीं। अभी तो निकलने का समय भी नहीं हुआ है। ओह! जरूर कोई दुर्घटना हुई है। कई लोगों के न रहने की खबर आई थी। थका हारा वॉन गॉग पेट पकड़ कर वहीं बैठ गया था। काश कि एक दिन की छुट्टी करके सब कुछ पहले ही सही करवा दिया गया होता। एक दिन लोग पानी पीकर ही रह गये होते इतनी जानें तो नहीं जातीं। दुर्घटना के बाद वॉन गॉग का वेतन गांव भर में फिर खप गया। दर्द से तड़पते को दिलाशा देते हुए वॉन गॉग जी भर कर रोया था। उन सभी के कष्टों को दूर करने में लगा हुआ था। बोरिनोज़ का ही होकर रह गया था वॉन गॉग। बोरिनोज़ वालों से इस तरह घुल मिल कर रहना उसके अधिकारियों को बहुत बुरा लगा, पादरी पद को धक्का देने वाला लगा फलतः अधिकारियों द्वारा जल्दी ही उसे पादरी पद से हटा दिया गया। एक बार फिर वॉन गॉग बिना काम के हो गया पर वो अभी भी बोरिनोज़ वालों की सहायता करता रहा अपने सामर्थ्य भर। खाना-पीना भी धीरे-धीरे कम होता गया। बीमारियों से घिरता चला गया। आंखें धंसती जा रहीं थीं। हद से कहीं ज्यादा कमजोर हो गया था वो। समय से पहले ही बूढ़ा दिखने लगा था। धीरे-धीरे वॉन गॉग मजदूरों के काम का भी नहीं रहा। दिन रात भर आसमान निहारता रहता था। कुछ भी समझने में खुद को असमर्थ पा रहा था कि उसने खुद को किताबों डुबो देना तय किया। लगातार पढ़ते-पढ़ते जल्दी ही यहां से भी ऊब गया बिना मंजिल के राही की भांति घूमने निकल गया। घूमते हुए दूर बहुत दूर निकल गया। थक कर दीवार से सटे जगह पर वह बैठ गया। लगातार न समझ सकने वाली बातें सोचता रहा जबकि हाथ वहां खड़े एक बूढ़े व्यक्ति का चित्र बनाने में लगा हुआ था। चित्र तो बहुत अच्छा नहीं था पर भाव डूब कर बनाए कलाकारों जैसा ही था। कुछ समय बाद तो वॉन गॉग दिन-दिन भर खेतों में ही बैठा रहता था। पहली बार वहां के लोग किसानों के जैसे घंटों खेत में बैठ कर चित्रकारी करते किसी को देख रहे थे।

जयंती पर विशेष

रघु ठाकुर

लेखक लोहियावादी विचारक हैं।

बकौल अंबेडकर संविधान की सफलता जनमत पर निर्भर

14 अप्रैल डॉ. भीमराव अंबेडकर बाबा साहब का जन्मदिन है। किसी व्यक्ति का जन्मदिन अपने आप में महत्व का नहीं होता बल्कि वह इन प्रतीक दिनों पर उनके कामों की चर्चा, उनकी प्रासंगिकता पर चर्चा करने का एक निमित्त होता है।

बाबा साहब की प्रासंगिकता उनके जीवन काल के बाद निरंतर बढ़ रही है और अपने अंतिम जीवन काल में वे जितने अकेले और निराशा में थे, अगर आज वे जिंदा होते तो शायद उस अकेलेपन या सामाजिक मान्यता के अभाव की निराशा से मुक्त हो चुके होते। क्योंकि-कुछ ऐसी स्थिति का निर्माण हुआ है की भले ही कोई उन्हें ना मानने वाला हो या उनका आलोचक भी हो पर उनके विरुद्ध बोलने का साहस नहीं कर सकता।

इसका एक बड़ा कारण यह भी है कि डॉक्टर अंबेडकर के समर्थन की सीमाएं अब महाराष्ट्र या उसके सीमाई क्षेत्र से बाहर निकल कर उत्तर भारत में भी पहुंची है। और हिंदी प्रदेश विशेषतः उत्तर प्रदेश, हरियाणा में उनके समर्थकों या मानने वालों की संख्या में खासी वृद्धि हुई है।

साथ ही उनके समर्थकों में एक विशेष प्रकार की एकजुटता व आक्रामकता भी आई है। जिससे उनकी खिलाफ्त करने वाले भी बचते हैं। अनुसूचित जाति के उनके समर्थक वोट भले ही किसी को देते हों परंतु बाबा साहब उनके लिए एक प्रेरणा का स्रोत व स्वाभिमान के प्रतीक हैं। और देश में शायद सर्वाधिक स्वप्रेरणा से उनकी छोटी बड़ी प्रतिमाओं का निर्माण उनके मानने वालों ने अपने-अपने इलाकों में किया है। अगर किसी नेता की प्रतिमा के क्षतिग्रस्त होने पर सबसे तीखी व उग्र प्रतिक्रिया होती है तो वह बाबा साहब के समर्थकों की होती है।

दरअसल पिछले 10 वर्षों से केंद्र में श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बनी भाजपा सरकार के कामकाज से देश के पढ़े-लिखे तबके और वंचित व अल्पसंख्यक तबकों में यह भावना पनपी है (सही या गलत) कि मोदी सरकार संविधान को बदलना चाहती है और एक धर्म का देश बनाना चाहती है, जो सरकार की मातृ संस्था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का घोषित लक्ष्य रहा है। सरकार के कामकाज के तरीकों से इस आशंका को बल मिलना स्वाभाविक है। जिस प्रकार पिछले वर्षों में विशेषतः श्री नरेंद्र मोदी के दूसरे कार्यकाल में देश की संवैधानिक और लोकतांत्रिक परंपराओं को बलाए ताक रखा गया है, प्रतिपक्ष को खत्म करने या घुटने टेक करने का प्रयास किया गया है, संविधान प्रदत्त देश के संघीय ढांचे को एक केंद्रीय या एकात्मक ढांचे में बदलने के प्रयास चल रहे हैं, सरकारी जांच संस्थाओं का प्रयोग एकपक्षीय हो रहा है, मीडिया को केवल सत्ता प्रचार का माध्यम बनने तक सीमित किया जा रहा है। राजनीति और चुनाव में धन (काला या सफेद) और कारपोरेट की भूमिका जिस तेजी से बढ़ रही है। उससे इस आशंका को वास्तविक खतरा महसूस करने के तार्किक कारण बनते हैं। और इसलिए जो लोग संविधान को बदलना चाहते हैं या संविधान को दरकिनार कर उसकी भावना व आत्मा को मारकर केवल शब्दों से खेलना चाहते हैं वे भी बेमन से या रणनीति के तहत ही सही ऊंची आवाज में बाबा साहब का नाम उच्चारण करते हैं और उनकी पाषाण प्रतिमाओं की पूजा करते हैं।

दूसरी तरफ सत्ताकांक्षी प्रतिपक्ष जो अपने राजनीतिक जनाधार को बचाए रखने के लिए बाबा साहब के नाम का इस्तेमाल कर रहा हैं वह भी भले ही बाबा साहब के विचार को न मानता हो परंतु उनका इस्तेमाल कवच व तलवार के रूप में करता है। उसके लिए एक शाब्दिक जुमला चलाया गया है कि बाबा साहब का संविधान और अनुसूचित जाति के मतदाताओं में यह बात पहुंचाने का प्रयास करता है कि यह संविधान केवल बाबा साहब की निर्मिति है और उनके विचारों की प्रतिध्वनि है। सत्ता पक्ष अपनी जातीय व सांप्रदायिक सोच के कारण बाबा साहब के संविधान को बदलना चाहता है। सत्ताकांक्षी प्रतिपक्ष भी भले ही बाबा साहब को न मानता हो उसके वैचारिक या सैद्धांतिक आदर्श भले ही बाबा साहब जैसे ना हो परंतु वह कम से कम अपने वोट के लिए अपने आधार को बचाने के लिए बाबा साहब के नाम का भजन तो करता है।

आज यह विचार करना चाहिए कि क्या हम आर्थिक व सामाजिक समानता प्राप्त कर सके हैं? बाबा साहब चाहते थे कि संविधान में समाजवाद के प्रावधानों को वाध्यकारी रूप में शामिल किया जाए। पर क्या आज का सत्ता पक्ष या सत्ताकांक्षी प्रतिपक्ष इसके लिए तैयार है? और है, तो कहे कि हम सब मिलकर देश की आर्थिक, सामाजिक विषमता को मिटाने वाले प्रावधान संविधान में शामिल करेंगे। जो बाबा साहब करना चाहते थे, परंतु तात्कालिक परिस्थितियों में नहीं कर सके थे।

बाबा साहब का मत था कि आने वाली पीढ़ी अपने विचारों के अनुसार परिवर्तन चाहेगी और उसे स्थाई रूप से अतीत का बंदी नहीं बनाना चाहिए। याने हर कालखंड की युवा पीढ़ी को अपने सोच व निष्कर्षों को प्रयोग करने का अधिकार व व्यवस्था होना चाहिए।

बाबा साहब तो राजकीय समाजवाद चाहते थे याने ऐसे प्रावधान जिसमें समता कानूनी बाध्यता हो। और आज का सत्ता पक्ष व सत्ताकांक्षी प्रतिपक्ष तो राजकीय पूंजीवाद स्थापित कर रहा है। सांप्रदायिक सोच व एक धर्म का राष्ट्र निर्माण करने वाली जमातें संविधान को प्रतिदिन जलाने जैसा काम कर रही है। और उनके मन में यह प्रबल आकांक्षा है कि बाबा साहब के आक्रोश में व्यक्त किए गए शब्दों की ओट में संविधान के वर्तमान मूल ढांचे को बदल दें। धर्मनिरपेक्षता के बजाय हिंदू राष्ट्र, समाजवाद और लोकतांत्रिक शब्दों को ही प्रस्तावना से हटाकर वर्तमान संघीय ढांचे को ही समाप्त कर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मूल सपने के अनुसार यूनेटरी संविधान याने शक्तिशाली केंद्र व कमजोर राज्य, होना चाहिए। जैसा प्राचीन काल में होता था कि एक महाराजा उनके नीचे छोटे-छोटे राजा वैसा ही परिवर्तित संविधान बना लें। यह भी खुश-पुश चर्चा है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ देश के संघीय संसदीय लोकतंत्र के वर्तमान स्वरूप को बदलकर अमेरिका जैसी राष्ट्रपति प्रणाली में बदलना चाहता है। संविधान से याचिकाओं के प्रावधान को जो न्याय पालिका को विधानेतर, न्याय संगत हस्तक्षेप का अधिकार देता है को भी हटाना चाहते हैं।

दूसरी तरफ सत्ताकांक्षी प्रतिपक्ष केवल बाबा साहब के नाम जप व संविधान बचाव का हल्ला पीटकर उन अनुसूचित जाति के मतदाताओं का समर्थन हासिल करना चाहते हैं जिनका मत प्रतिशत देश में लगभग 17 प्रतिशत है और जो बाबा साहब को अपना मुक्तिदाता मानते हैं और उनके नाम के बहाव में वह सकते हैं।

बाबा साहब का जो महत्वपूर्ण तीसरा निष्कर्ष था उसे नजरअंदाज किया जाता है कि संविधान की सफलता, असफलता संविधान की किताब या पोथी पर नहीं बल्कि उसे लागू करने वालों की नियत, क्षमता व योग्यता पर निर्भर होगी। और उन लोगों के सामर्थ्य का निर्णय अंततः जनमत ही करेगा।

सच्चाई यह है कि दलित और पिछड़ी जातियों से जो लोग सत्ता में आए उनमें से चंद अपवादों को छोड़ दें तो अधिकांश ने समग्र समाज को आगे ले जाने के बजाय खुद को और अपने परिवार को उच्च वर्णीय ढांचे में ढाल लिया, इसीलिए वे अपनी समाज के वैचारिक नेता नहीं हैं। जाति से उपजा नेता पदाधिकारी हो सकता है, सत्ताधीश हो सकता है परंतु नेता नहीं हो सकता। नेता वही हो सकता है जो व्यापक समाज की तरक्की के लिए अपने आप को, अपने परिवार को कुर्बान करने के लिए तैयार हो।

महात्मा गांधी और डॉ. अंबेडकर में यह साम्य है कि गांधी ने जो भी किया वह अपनी समझ से दुनिया और देश के लिए किया, स्वयं के लिए और अपने परिवार के लिए कुछ भी नहीं किया। इसी प्रकार बाबा साहब ने जो भी किया अपनी समझ से अपने समाज के उत्थान और देश के लिए किया खुद को या अपने परिवार के लिए कुछ भी नहीं किया।

संविधान को लेकर जो शंकाएं हैं और जो आसन्न संकट है वह भयावह है। परंतु उनका सामना करने के लिए और भारतीय लोकतंत्र के समक्ष उत्पन्न नई चुनौतियों के मुकाबले के लिए निम्न मुद्दे लक्षित हैं...-

1 - अनुसूचित, जाति जनजाति और पिछड़े वर्ग के लोग अपने मानसिक पिछड़ेपन से मुक्ति के लिए सांस्कृतिक अभियान चलाएं। कभी इस पर विचार करें की कावड़ यात्रियों में, बजरंग दल में मंदिर आंदोलन में बहुमत हिस्सेदारी अनुसूचित जाति और पिछड़ी जातियों की क्यों होती है? और अगर यह चेतना पैदा नहीं होगी तो लोकतंत्र की रक्षा कैसे होगी?

अगर पीड़ित और वंचित लोग ही सत्ता और श्रेष्ठता के छोटे-छोटे अपने स्वार्थ के लिए पिछलग्गू बने रहेंगे तो यह मानसिक और सांस्कृतिक क्रांति कैसे संभव होगी?

2. वैश्विक पूंजीवाद के नव उभार और विश्व, व्यापीकरण के बाद अब गांधी और अंबेडकर को बांटकर देखने की नहीं बल्कि साथ लेकर चलने की जरूरत है। महात्मा गांधी और बाबा साहब के बीच डॉ. लोहिया एक वैचारिक सेतु जैसे हैं जो इस उद्देश्य के लिए सर्वाधिक प्रासंगिक हैं।

3. अनुसूचित जाति जनजाति और पिछड़ी जातियों को आपसी भाईचारा और बंधुत्व बढ़ाने के लिए अंतरजातीय विवाहों की बड़े पैमाने पर शुरुआत करनी चाहिए। जाति के विनाश के लिए अंतरजातीय विवाह सबसे कारगर उपाय है। यह कितना विचित्र है कि अगर अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति के बीच कोई शादी विवाह कर ले तो झगड़ा ही नहीं होते वरन कत्ल तक हो जाते हैं, परंतु अगर वे उच्च जाति में शादी करते हैं इसे न केवल स्वीकारते हैं वरन् इस पर गौरवान्वित महसूस करते हैं।

4. अनुसूचित जाति पिछड़े वर्ग के मतदाता तय करें कि हमारा नेता पूंजीवादी मानसिकता का नहीं होगा। जातिवादी और परिवारवादी नहीं होगा। हम उसे ही अपना नेता स्वीकार करेंगे जो चार बीमारियों से मुक्त हो जातिवाद, परिवारवाद, पूंजीवाद और अंधविश्वासी पुरोहितवाद। ऐसा नेतृत्व पैदा करना जनमत का काम है और वही जनमत न केवल वर्तमान संविधान और लोकतंत्र को बचा सकता है, बल्कि बाबा साहब की कल्पना के आदर्श समाजवादी संविधान के सपने को जमीन पर उतर सकता है । यही बाबा साहब के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

बाबा साहब अंबेडकर जयंती

प्रो. (डॉ.) संजय द्विवेदी

(लेखक माखनलाल चतुर्वेदी चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल के जनसंचार विभाग में आचार्य हैं)

'मूक' समाज को आवाज देकर बन गए उनके 'नायक'

'अगर कोई इंसान, हिंदुस्तान के क़ुदरती तत्वों और मानव समाज को एक दर्शक के नज़रिए से फ़िल्म की तरह देखता है, तो ये मुल्क नाइंसाफ़ी की पनाहगाह के सिवा कुछ नहीं दिखेगा।' बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर ने आज से 103 वर्ष पूर्व 31 जनवरी 1920 को अपने अख़बार 'मूकनायक' के पहले संस्करण के लिए जो लेख लिखा था, यह उसका पहला वाक्य है। अपनी पुस्तक 'पत्रकारिता के युग निर्माता : भीमराव आंबेडकर' में लेखक सूर्यनारायण रणसुभे ने इसलिए कहा भी है - कि 'जाने-अनजाने बाबा साहेब ने इसी दिन से दीन-दलित, शोषित और हजारों वर्षों से उपेक्षित मूक जनता के नायकत्व को स्वीकार किया था।'

बाबा साहेब ने 'मूकनायक' पत्र की शुरुआत की थी। इस समाचार पत्र के नाम में ही आंबेडकर का व्यक्तित्व छिपा हुआ है। वे 'मूक' समाज को आवाज देकर ही उनके 'नायक' बने। बाबा साहेब ने कई मीडिया प्रकाशनों की शुरुआत की। उनका संपादन किया। सलाहकार के तौर पर काम किया और मालिक के तौर पर उनकी रखवाली की। मूकनायक के प्रकाशन के समय बाबा साहेब की आयु मात्र 29 वर्ष थी। और वे तीन वर्ष पूर्व ही यानी 1917 में अमेरिका से उच्च शिक्षा ग्रहण कर लौटे थे। अक्सर लोग ये प्रश्न करते हैं कि कि एक उच्च शिक्षित युवक ने अपना समाचार-पत्र मराठी भाषा में क्यों प्रकाशित किया? वह अंग्रेजी भाषा में भी समाचार-पत्र का प्रकाशन कर सकते थे। ऐसा करके वह अभिजन समाज के बीच प्रसिद्धि पा सकते थे और अंग्रेज सरकार तक दलितों की स्थिति प्रभावी ढंग से रख सकते थे। लेकिन बाबा साहेब ने 'मूकनायक' का प्रकाशन वर्षों के शोषण और हीनभावना की ग्रंथि से ग्रसित दलित समाज के आत्म-गौरव को जगाने के लिए किया गया था। जो समाज शिक्षा से दूर था, जिसके लिए अपनी मातृभाषा मराठी में लिखना और पढ़ना भी कठिन था, उनके बीच जाकर 'अंग्रेजी मूकनायक' आखिर क्या जागृति लाता? इसलिए आंबेडकर ने मराठी भाषा में ही समाचार पत्रों का प्रकाशन किया।

अगर हम उनकी पहुंच की और उनके द्वारा चलाए गए सामाजिक आंदोलनों की बात करें, तो बाबा साहेब अपने समय में संभवतः सब से ज़्यादा दौरा करने वाले नेता थे। सबसे खास बात यह है कि उन्हें ये काम अकेले अपने बूते ही करने पड़ते थे। न तो उन के पास सामाजिक समर्थन था, न ही आंबेडकर को उस तरह का आर्थिक सहयोग मिलता था, जैसा कांग्रेस पार्टी को हासिल था। इसके विपरीत, आंबेडकर का आंदोलन ग़रीब जनता का आंदोलन था। उनके समर्थक वो लोग थे, जो समाज के हाशिए पर पड़े थे, जो तमाम अधिकारों से महरूम थे, जो ज़मीन के नाम पर या किसी ज़मींदार के बंधुआ थे। आंबेडकर का समर्थक, हिंदुस्तान का वो समुदाय था, जो आर्थिक रूप से सब से कमज़ोर था। इसका नतीजा ये हुआ कि आंबेडकर को सामाजिक आंदोलनों के बोझ को सिर से पांव तक केवल अपने कंधों पर उठाना पड़ा। उन्हें इस के लिए बाहर से कुछ ख़ास समर्थन हासिल नहीं हुआ। और ये बात उस दौर के मीडिया को बख़ूबी नज़र आती थी। आंबेडकर के कामों को घरेलू ही नहीं, अंतरराष्ट्रीय मीडिया में भी जाना जाता था। हमें हिंदुस्तान के मीडिया में आंबेडकर की मौजूदगी और उनके संपादकीय कामों की जानकारी तो है, लेकिन ये बात ज़्यादातर लोगों को नहीं मालूम कि उन्हें विदेशी मीडिया में भी व्यापक रूप से कवरेज मिलती थी। बहुत से मशहूर अंतरराष्ट्रीय अख़बार, आंबेडकर के छुआछूत के ख़िलाफ़ अभियानों और महात्मा गांधी से उनके संघर्षों में काफ़ी दिलचस्पी रखते थे।

लंदन का 'द टाइम्स', ऑस्ट्रेलिया का 'डेली मर्करी', और 'न्यूयॉर्क टाइम्स', 'न्यूयॉर्क एम्सटर्डम न्यूज़', 'बाल्टीमोर अफ्रो-अमरीकन', 'द नॉरफॉक जर्नल' जैसे अख़बार अपने यहां आंबेडकर के विचारों और अभियानों को प्रमुखता से प्रकाशित करते थे। भारतीय संविधान के निर्माण में आंबेडकर की भूमिका हो या फिर संसद की परिचर्चाओं में आंबेडकर के भाषण, या फिर नेहरू सरकार से आंबेडकर के इस्तीफ़े की ख़बर। इन सब पर दुनिया बारीक़ी से नज़र रखती थी। बाबा साहेब ने अपने सामाजिक आंदोलन को मीडिया के माध्यम से भी चलाया।

उन्होंने मराठी भाषा मे अपने पहले समाचार पत्र 'मूकनायक' की शुरुआत क्षेत्रीयता के सम्मान के साथ की थी। मूकनायक के अभियान के दिग्दर्शन के लिए तुकाराम की सीखों को बुनियाद बनाया गया। इसी तरह, आंबेडकर के एक अन्य अख़बार 'बहिष्कृत भारत' का मार्गदर्शन संत ज्ञानेश्वर के सबक़ किया करते थे। आंबेडकर ने इन पत्रिकाओं के माध्यम से भारत के अछूतों के अधिकारों की मांग उठाई। उन्होंने मूकनायक के पहले बारह संस्करणों का संपादन किया, जिसके बाद उन्होंने इसके संपादन की ज़िम्मेदारी पांडुरंग भाटकर को सौंप दी थी। बाद में डी डी घोलप इस पत्र के संपादक बने। हालांकि मूकनायक का प्रकाशन 1923 में बंद हो गया। इसकी खास वजह ये थी कि आंबेडकर, इस अख़बार का मार्गदर्शन करने के लिए उपलब्ध नहीं थे। वो उच्च शिक्षा के लिए विदेश चले गए थे। इसके अलावा अख़बार को न तो विज्ञापन मिल पा रहे थे और न ही उसके ग्राहकों की संख्या इतनी ज़्यादा थी कि उससे अख़बार के प्रकाशन का ख़र्च निकाला जा सके। शुरुआती वर्षों में राजिश्री शाहू महाराज ने इस पत्रिका को चलाने में सहयोग दिया था। आंबेडकर की पत्रकारिता का अध्ययन करने वाले गंगाधर पानतावणे कहते हैं कि, 'मूकनायक का उदय, भारत के अछूतों के स्वाधीनता आंदोलन के लिए वरदान साबित हुआ था। इसने अछूतों की दशा-दिशा बदलने वाला विचार जनता के बीच स्थापित किया।'

मूकनायक का प्रकाशन बंद होने के बाद, आंबेडकर एक बार फिर से पत्रकारिता के क्षेत्र में कूदे, जब उन्होंने 3 अप्रैल 1927 को 'बहिष्कृत भारत' के नाम से नई पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। ये वही दौर था, जब आंबेडकर का महाद आंदोलन ज़ोर पकड़ रहा था। बहिष्कृत भारत का प्रकाशन 15 नवंबर 1929 तक होता रहा। कुल मिला कर इसके 43 संस्करण प्रकाशित हुए। हालांकि, बहिष्कृत भारत का प्रकाशन भी आर्थिक दिक़्क़तों की वजह से बंद करना पड़ा। मूकनायक और बहिष्कृत भारत के हर संस्करण की क़ीमत महज़ डेढ़ आने हुआ करती थी, जबकि इस की सालाना क़ीमत डाक के ख़र्च को मिलाकर केवल 3 रुपए थी। इसी दौरान 'समता' नाम के एक और पत्र का प्रकाशन आरंभ हुआ, जिससे 'बहिष्कृत भारत' को नई ज़िंदगी मिली। उसे 24 नवंबर 1930 से 'जनता' के नए नाम से प्रकाशित किया जाने लगा। जनता, भारत में दलितों के सब से लंबे समय तक प्रकाशित होने वाले अखबारों में से है, जो 25 वर्ष तक छपता रहा था। 'जनता' का नाम बाद में बदल कर, 'प्रबुद्ध भारत' कर दिया गया था। ये सन् 1956 से 1961 का वही दौर था, जब आंबेडकर के आंदोलन को नई धार मिली थी।

बाबा साहब आंबेडकर ने 65 वर्ष 7 महीने और 22 दिन की अपनी जिंदगी में करीब 36 वर्ष तक पत्रकारिता की। 'मूकनायक' से लेकर 'प्रबुद्ध भारत' तक की उनकी यात्रा, उनकी जीवन-यात्रा, चिंतन-यात्रा और संघर्ष-यात्रा का भी प्रतीक है। मेरा मानना है कि 'मूकनायक'... 'प्रबुद्ध भारत' में ही अपनी और पूरे भारतीय समाज की मुक्ति देखता है। आंबेडकर की पत्रकारिता का संघर्ष 'मूकनायक' के माध्यम से मूक लोगों की आवाज बनने से शुरू होकर, 'प्रबुद्ध भारत' के निर्माण के स्वप्न के साथ विराम लेता है। 'प्रबुद्ध भारत' यानी एक नए भारत का निर्माण। आंबेडकर के विचारों का फलक बहुत बड़ा है। ये सही है कि उन्होंने वंचित और अछूत वर्ग के लिए एक लंबी लड़ाई लड़ी, लेकिन उनका मानवतावादी दृष्टिकोण हर वर्ग को छूता है। आंबेडकर का मानना था कि पत्रकारिता का पहला कर्तव्य है, 'बिना किसी प्रयोजन के समाचार देना, बिना डरे उन लोगों की निंदा करना, जो गलत रास्ते पर जा रहें' हों, फिर चाहे वे कितने ही शक्तिशाली क्यों न हों और पूरे समुदाय के हितों की रक्षा करने वाली नीति को प्रतिपादित करना।

शिक्षा घोटाले जैसे विषय पर औसत दरजे की फिल्म

वेब समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक हैं)

किसी भी फिल्म या वेबसिरीज़ का कथ्य महत्वपूर्ण हो, इतना ही काफी नहीं होता है, उस कथ्य का ठीक ठीक निर्वाह भी ज़रुरी होता है। हालिया प्रदर्शित फिल्म 'पटना शुक्ला' शिक्षा घोटाले जैसे मुद्दे पर केन्द्रित है और फिल्म के निर्माता-निर्देशक इसे मनोरंजक तरीके से उठाने की कोशिश करते हैं लेकिन कहानी और पटकथा में जो धार ज़रुरी होती है उसके अभाव में यह फिल्म एक औसत दर्जे की फिल्म बन कर रह गई है। फिल्म की कहानी की केन्द्रीय भूमिका में हैं एक विवाहित स्त्री, तन्वी शुक्ला (रवीना टंडन) जो अपने पति सिद्धार्थ (मानव विज) की हर जरूरत का ख्याल रखने वाली परिपूर्ण गृहिणी हैं और बेटे की स्कूल वैन के पीछे स्कूटी से भागकर टिफिन पहुँचाने वाली परफेक्ट माँ भी है। इसके साथ ही वह सेशन कोर्ट में वकील है, मगर औरत होने के कारण उसकी इस डिग्री को कोई तवज्जो नहीं देता है और उसे चुनौतीपूर्ण मामले भी नहीं मिलते हैं। इसी पेशेवर हालात में एक गरीब स्टूडेन्ट रिंकी कुमारी (अनुष्का कौशिक) उससे अपना केस लड़ने की गुजारिश करती है। रिंकी कहती है कि विश्वविद्यालय ने उसकी मार्कशीट बदल दी है। उसके हिसाब से उसे फर्स्ट डिवीजन पास होना चाहिए था, जबकि विश्वविद्यालय ने उसे फेल कर दिया। रिंकी के इसी आत्मविश्वास और न्याय पाने की जिद के कारण तन्वी उसका साथ देती है और उसके केस के लिए दिन-रात एक कर देती है। इस दरमियान शिक्षा के मन्दिर में भ्रष्टाचार के कई काले सच सामने आते हैं जिससे कहानी रोचक हो जाती है ।

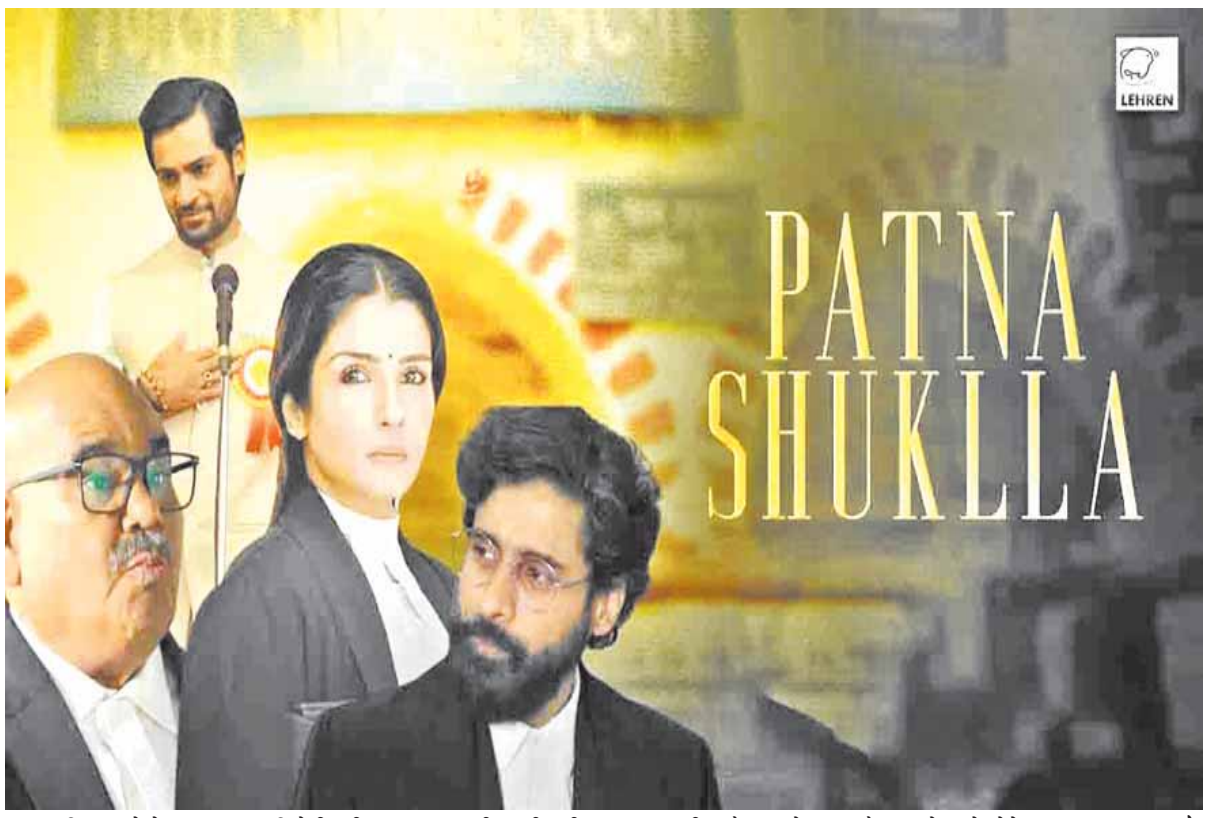

इस फिल्म को देखकर लगा अभिनेत्री रवीना टण्डन अपनी दूसरी पारी में लगातार दमदार भूमिकाएं चुन रही हैं। अपनी पिछली वेबसिरीज 'कर्मा कॉलिंग' में ग्रे शेड वाली अमीर बॉलीवुड दीवा का किरदार निभाने वाली रवीना, फिल्म 'पटना शुक्ला' में एक आदर्शवादी पत्नी, माँ और वकील के रोल में हैं। तन्वी के रूप में रवीना टण्डन ने अच्छा अभिनय किया है एक वकील के रुप में न्याय के पक्ष में खड़े होने का उनका जुनून और रिंकी वाले प्रकरण में उनका यह कहना कि सवाल रिंकी को न्याय दिलाने से आगे शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त घोटालों पर प्रहार करना भी है। न्याय के लिये संघर्ष का फैसला करने वाली रिंकी सिंह के रुप में अनुष्का कौशिक भी अपने ईमानदार परफॉर्मेंस से दिल जीत लेती हैं। जज के रूप में अब हमारे बीच नहीं रहे सतीश कौशिक की सहज अदाकारी भावुक कर देती है। वहीं, मानव विज, राजू खेर, जतिन गोस्वामी ने भी अपनी भूमिकाओं के साथ न्याय किया है। हालांकि, बड़े कॉरपोरेट वकील के रोल में चंदन रॉय सान्याल और भ्रष्ट नेता के रोल में जतिन के चरित्र को और मेहनत के साथ लिखा जाना था। फिल्म के निर्देशक और सह-लेखक विवेक बुडाकोटी ने फिल्म में शिक्षा घोटाले जैसा अच्छा विषय उठाया है। उन्होंने इस गँभीर विषय को मनोरंजक कोर्ट रूम ड्रामा में तब्दील करने की बढ़िया कोशिश भी की है, लेकिन वह कहानी और पटकथा को असरदार नहीं बना पाए हैं। लेखन में और मेहनत की जरूरत महसूस होती है। केस के घटनाक्रम मेलोड्रमैटिक लगते हैं मगर वहीं कोर्ट में जोरदार दलीलों की कमी खलती है। फिल्म का समग्र प्रभाव भी नब्बे के दशक वाला लगता है, लेकिन एक्टर-एक्ट्रेस की सधी हुई एक्टिंग इसे एक बार देखने लायक बना देती है । तकनीकी पहलुओं की बात करें, तो फिल्म का प्रोडक्शन डिजाइन औसत है। सैम्युल शेट्टी और आकांक्षा नंद्रेकर के संगीत निर्देशन में कोई ऐसा गाना नहीं है, जो याद रह पाए। विनी राज बतौर सम्पादक एडिटिंग टेबल पर कुछ और दृश्यों में काट-छाँट कर सकती थीं। हां, नेहा पारती मटियानी का कैमरावर्क दमदार है। उनका छायांकन 'पटना शुक्ला' की मध्य आयवर्गीय दुनिया की छवि को अपने कैमरे से एक चित्र के माफिक अंकित करती है।

मनोज बाजपेयी और रवीना टण्डन की फिल्म 'शूल'÷ फिल्म जिन दर्शकों ने देखी थी उन्होंने उस फिल्म में मनोज के चरित्र को तो याद रखा मगर रवीना के चरित्र को भूल गए थे। लेकिन, रवीना ने इस फिल्म के जरिये इस बार मनोज की फिल्म 'सिर्फ एक बंदा काफी है' के बराबर की लकीर खींची हैं। तन्वी फिल्म में बिहार की बेटी है। एक ऐसे राज्य में वह वकालत करने निकली है, जिसके सिस्टम को घुन लग चुका है। विवेक बुड़ाकोटी ने पूरी कोशिश की है कि यह चरित्र परदे पर कुछ यूँ पेश किया जाए कि मध्यमवर्गीय परिवार की बेटियां अपने शरीर के सबसे अहम हिस्से, अपनी रीढ़, को सीधा रखना सीख सकें। दबाव में तन्वी झुकती नहीं है। कद्दावर नेता की वह सुनती नहीं है और तन्वी के चरित्र को रवीना ने यादगार बना दिया है ।

45 मिनट तक जिला अस्पताल अंधेरे में डूबा

सीएस ने हॉस्पिटल मैनेजर और इलेक्ट्रिशियन को किया नोटिस जारी

संजय द्विवेदी, बैतूल। जिला अस्पताल में बीती रात बड़ी लापरवाही सामने आई। यहां रात 12 बजे से लगभग 45 मिनट तक जिला चिकित्सालय अंधेरे में डूबा रहा। ऑटो जनरेटर चालू न होने से कई आपातकालीन सेवाओं पर इसका असर पड़ा है। सीएस ने आज इस मामले में अस्पताल मैनेजर और इलेक्ट्रिशियन को नोटिस जारी किया है। जिला अस्पताल में नया भवन बनने के बाद यहां बिजली की समुचित व्यवस्था के लिए लाखों रुपए के आटो जनरेटर इंस्टाल किए गए है। इसके अलावा तीन अन्य जनरेटर भी यहां है। लेकिन बीती रात तेज हवाओं के साथ जमकर बारिश शुरू हुई, तो बैतूल जिला चिकित्सालय में पावर कट हो गया। जिसके बाद यहां रात करीब 12 बजे लाइट चली गई। जिसके चलते पूरा जिला चिकित्सालय परिसर अंधेरे में डूब गया। यह हालात यहां करीब 45 मिनट तक बने रहे। इससे आईसीयू, एसएनसीयू, पीआईसीयू समेत वार्डों में अंधेरा छा गया। मरीज और उनके परिजन अचानक अंधेरा छाने से परेशान हो गए। खासकर शिशुओं के वार्ड एसएनसीयू में इससे हडक़ंप मच गया।

ऑटो जनरेटर शुरू नहीं हो सका

बताया जा रहा है कि यहां पर लाखों की लागत का एक ऑटो जनरेटर लगाया गया है। जो बिजली जाते ही तुरंत शुरू हो जाता है। लेकिन बीती रात यह ऑटो जनरेटर शुरू ही नहीं हो सका। बिजली जाने के समय इलेक्ट्रीशियन भी मौके पर मौजूद नहीं था। जिसके कारण इसे शुरू भी नहीं कराया जा सका। जिला अस्पताल में तैनात इलेक्ट्रीशियन किशोर बिहारिया के मुताबिक, करीब 45 मिनट बिजली बंद रही। ऑटो जनरेटर में टेक्निकल समस्या की वजह से ऐसा हुआ। इसे सुधारने के लिए जिस व्यक्ति को रखा गया है, उसे यहां पहुंचने में ही 15 से 20 मिनट का समय लग गया। जबकि सुधार काम करते-करते उसे 15 से 20 मिनट और लग गए। जिसकी वजह से करीब 45 मिनट जिला अस्पताल में बिजली बंद रही। अभी भी ऑटो जनरेटर सुधार नहीं जा सका है। जिसे सुधारने के प्रयास किया जा रहे हैं ।हालांकि अन्य जनरेटर की मदद से बिजली आपूर्ति शुरू कर दी गई है।

लापरवाही पर नोटिस जारी-

जिला अस्पताल प्रबंधन ने रात को हुए ब्लैकआउट को गंभीरता से लिया है। प्रभारी सिविल सर्जन डॉ. जगदीश घोरे ने इस पर अस्पताल के मैनेजर और इलेक्ट्रीशियन के अलावा दो कर्मचारियों को कारण बताओं नोटिस जारी किया है। उनसे स्पष्टीकरण मांगा गया है कि आखिर जनरेटर स्टार्ट क्यों नहीं हो सका और इसके शुरू होने में विलंब की वजह क्या है। डॉ. घोरे ने बताया कि जनरेटर के स्विच का कोई फाल्ट हुआ था। जिसकी वजह से यह शुरू नहीं हो सका था। अभी मॉक ड्रिल करवाकर पूरी व्यवस्थाओं को जांचा गया है और निर्देश दिए गए हैं कि एक इलेक्ट्रिशियन रात में भी ड्यूटी पर तैनात रहे हैं। ताकि ऐसी हालत में वह तुरंत स्थितियों को संभाल सके।

कर्मचारियों की कमी से ही रही समस्या

जिला अस्पताल के मैनेजर शिवेंद्र आम्बुलकर ने बताया कि बिजली समस्या को दुरुस्त रखने के लिए उन्होंने कई बार उच्च स्तर पर पत्र लिखा है। यहां ऑटो कट जनरेटर लगाने के लिए पत्र भी भेजे गए हैं। लेकिन इस पर अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। उनके पास मौजूदा समय में एकमात्र स्थाई इलेक्ट्रीशियन है। जबकि 2 लोगों को आरकेएस से रखा गया है। आने वाले समय में इस तरह की स्थिति न बने, इसे लेकर भी प्रयास किया जा रहे हैं। जिला अस्पताल में फिलहाल 12 जनरेटर है। जिनमें से सात काम रहा है।

आधा दर्जन गांवों में तीन दिनों से बिजली सप्लाई ठप, खेती के काम अटके

बैतूल। जिले के चिचोली स्थित बिजली सबस्टेशन के अंतर्गत आने वाले आधा दर्जन गांवों में पिछले 3 दिनों से बिजली ठप है। बिजली कंपनी का अमला 3 दिनों में भी फाल्ट ढूंढ नहीं पाया है। इससे खेती के कार्य नहीं हो रहे हैं और ग्रामवासी इस भीषण गर्मी में बेहद परेशान हैं। चिचोली स्थित बिजली सब स्टेशन के अंतर्गत आने वाले आधा दर्जन गांवों में पिछले 3 दिनों से बिजली ठप है। बिजली कंपनी का अमला 3 दिनों में भी फाल्ट ढूंढ नहीं पाया है। इससे खेती के कार्य नहीं हो रहे हैं और ग्रामवासी इस भीषण गर्मी में बेहद परेशान हैं। इस संबंध में ग्रामवासियों ने बताया कि पिछले दिनों आंधी-तूफान के साथ हुई बेमौसम बारिश से बिजली सप्लाई ठप हो गई थी। इसके चलते ग्राम बोदी जुनावानी, करपा आमला, टाहली, कुमली, गड़ा आदि ग्रामों के खेतों में 3 दिनों से बिजली सप्लाई ठप पड़ी है।

सरयू नदी के जल एवं मिट्टी से बनाई रामलला की बाल रूप प्रतिमा

बैतूल। भारतीय संस्कृति और धर्म के प्रमुख त्योहार रामनवमी के महत्वपूर्ण पर्व के अवसर पर, राष्ट्रीय हिंदू सेना द्वारा बैतूल नगर में एक भव्य और रोमांचक शोभायात्रा का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें स्थानीय लोगों के अलावा सम्पूर्ण जिले से भी भाग लेने का आमंत्रण है। इस उत्सव में प्रसिद्ध मूर्ति कलाकार सुनील प्रजापति द्वारा निर्मित अयोध्या के भव्य श्रीराम मंदिर में विराजित रामलला की आकर्षक मूर्ति की भी झांकी सजाई जाएगी, जो नगर के सांस्कृतिक और धार्मिक माहौल को और भी उत्साहित करेगी।

मूर्ति की यह है विशेषता- यह मूर्ति श्री राम जन्मभूमि सरयू नदी के जल एवं मिट्टी से निर्मित है, मूर्ति रामनवमी के दिन शोभायात्रा में शामिल होंगी, जो शोभायात्रा के मुख्य आकर्षण का केंद्र बनेगी। इस मूर्ति की उचाई 9 फ़ीट है और इसकी चौड़ाई 5 फ़ीट है, जबकि इसका वजन 105 किलो है। सुनील प्रजापति ने बताया कि मूर्ति बनाने में उन्हें एक महीने का समय लगा। इस कार्य में उनका पूरा परिवार सहयोग कर रहा है।

प्रतिमा में भगवान विष्णु के अनेक अवतार- वरिष्ठ सहयोगी गोलू उघड़े ने बताया मूर्ति में श्री रामलाल के बालरूप के साथ कमल फूल, हनुमान, मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, ओम, पघ, चक्र, सूर्य, गदा, शंख, स्वस्तिक, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि, गरुड़ आदि का स्वरूप संगठित हैं। राष्ट्रीय हिंदू सेना द्वारा आयोजित शोभायात्रा में सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक एकता को मजबूत करने का संदेश दिया जा रहा है।

राम दरबार की झांकी भी रहेगी आकर्षण का केंद्र - वरिष्ठ सहयोगी गोलू यादव ने बताया कि शोभायात्रा में राम दरबार सहित बाहुबली हनुमान जी की झांकियां भी आकर्षण का केंद्र रहेगी। शोभायात्रा में श्रीरामचंद्र, राम शिला, हनुमान, राम दरबार, आदिवासी नृत्य, वानर सेना, अखाड़ा, बाहुबली हनुमान जी, ढोल नगाड़े, कैसियो बाजे और दर्जनों झांकियां सम्मिलित रहेंगी। ज़िला अध्यक्ष अनुज राठौर ने बताया कि 17 अप्रैल दिन बुधवार शाम 5 बजे से शोभा यात्रा प्रारंभ होगी। राष्ट्रीय हिंदू सेना ने समस्त हिन्दू समाज राम भक्तों से शोभा यात्रा में सम्मिलित होने की अपील की है।

बसपा प्रत्याशी हेतु बैतूल लोकसभा निर्वाचन की अधिसूचना जारी : जिला निर्वाचन अधिकारी

बैतूल। लोकसभा निर्वाचन 2024 के अनुक्रम में संसदीय क्षेत्र बैतूल-29 हेतु निर्वाचन के लिए अधिसूचना जारी कर दी गई है। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं रिटर्निंग अधिकारी श्री नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग से प्राप्त तदाशय की अधिसूचना जारी कर दी है। अधिसूचना के अनुसार बहुजन समाज पार्टी द्वारा अपने प्रायोजित प्रत्याशियों या उसके किसी प्रस्थापक द्वारा 19 अप्रैल 2024 शुक्रवार तक अवकाश दिवसों 13, 14 और 17 अप्रैल को छोड़कर प्रातः 11 से 3 तक नाम निर्देशन प्राप्त एवं दाखिल कर सकेंगे।

नाम निर्देशन प्रक्रिया का प्रथम दिन- शुक्रवार को नाम निर्देशन प्रक्रिया के प्रथम दिन एक नाम निर्देशन पत्र प्राप्त किया गया। उल्लेखनीय है कि निर्देशन प्रक्रिया बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशियों के लिए जारी है। एक प्रत्याशी अधिकतम 4 आवेदन और एक दल की ओर के अधिकतम 4 प्रत्याशी नाम निर्देशन कर सकते है। उल्लेखनीय है कि बैतूल जिले में 26 अप्रैल को मतदान होना था। नाम निर्देशन संवीक्षा एवं नाम वापसी तक की कार्यवाही की जा चुकी थी।

कुछ दिन पहले हटाया गया अतिक्रमण फिर से सड़क पर

व्यवस्थित कार्ययोजना नहीं होने के कारण अधूरा पड़ा है कार्य

बैतूल। शहर को सुंदर और अतिक्रमण मुक्त बनाने की मंशा सिर्फ कागजों पर ही सिमट कर रह गई है। अतिक्रमण हटाने के लिए जनप्रतिनिधियों से लेकर प्रशासनिक अधिकारियों ने जो पहल की थी वो महज दिखावा साबित हो रही है। जिन सडक़ों को चौड़ा करने के लिए अतिक्रमण हटाया गया था। अब उन सडक़ों पर अतिक्रमण की वापसी हो गई है योंकि कहीं सडक़ का निर्माण नहीं हुआ तो कहीं अतिक्रमण ही नहीं हटा।

अधूरा पड़ा सड़क निर्माण- तुल्लाजी पेट्रोल पंप कोठीबाजार से थाना चौक तक सडक़ को चौड़ा कर बीच में डिवाईडर बनाए जाने की योजना जनता को सपने के रूप में दिखाई गई थी और यह सपना सपना ही रह गया। मुल्लाजी पेट्रोल से बस स्टैण्ड के बीच सडक़ के आजू -बाजू अतिक्रमण हटाकर खुदाई कर दी गई थी और गिट्टी डालकर सडक़ निर्माण का कार्य प्रारंभ हो गया था लेकिन कुछ ही दिनों बाद यह कार्य बंद हो गया। और अब जहां पर गिट्टी डली थी वहां पर लोगों ने अतिक्रमण करना शुरू कर दिया। ठेकेदार आखिर सडक़ निर्माण यों नहीं कर रहा है? यह भी स्पष्ट नहीं हो पा रहा है।

पुनः कर लिया अतिक्रमण- जेसीबी मशीन, ट्रैक्टर ट्राली, राजस्व अधिकारी, नपा अधिकारी, पुलिस अधिकारी और कर्मचारी का पूरा अमला जब अतिक्रमण हटाने निकला था तो लल्ली चौक के पास हायतौबा मच गई। विवाद की स्थिति निर्मित हुई और आखिरकार अतिक्रमण हटाया गया। अतिक्रमण हटाने के बाद अधिकारी उस स्थान को भूल गए, जहां से अतिक्रमण हटाया गया था। अब अगर आकर वे देखेंगे तो उन्हें यथा स्थिति मे अतिक्रमण दिखाई देगा, कयोंकि जिनका अतिक्रमण हटा था उन्होंने कुछ दिन बाद ही पुनः अतिक्रमण कर लिया।

इनका कहना...

लोकसभा निर्वाचन की आचार संहिता के हटने के बाद ही अतिक्रमण अभियान चलाया जाएगा।

-राजीव कहार, एसडीएम, बैतूल

समय-सीमा में नहीं बनी टैगोर वार्ड की सड़क

बैतूल। शहर के विकास और सुंदर बनाने के लिए सड़क बनाने का कार्य नगर पालिका के द्वारा किया जा रहा है। कार्य तो शुरू हो जाता है लेकिन अधिकारियों की ठीक ढंग से मानीटरिंग नहीं करने के कारण कार्य समय सीमा में नहीं हो पाते हैं। जिसका खामियाजा जनप्रतिनिधियों को भुगतना पड़ता है क्योंकि नागरिक परेशान होते हैं तो वे भी जनप्रतिनिधियों को फोन करते हैं। शहर के राजनैतिक हाईप्रोफाइल वार्ड की गिनती में आने वाले टैगोर वार्ड में सड़क निर्माण का कार्य कछुआ गति से चलने के कारण यहां के वार्डवासी परेशान हैं तो अन्य वार्डों की स्थिति क्या होगीड़ इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है। टैगोर वार्ड में गुप्ता माल से एचपी गैस एजेंसी के सामने तक वाले खस्ताहाल हो गए सडड़ पर नगर पालिका ने सीसी रोड बनाने की योजना बनाई थी। एक करोड़ से अधिक लागत की इस सड़क का वर्क आर्डर अक्टूबर 2023 में जारी हुआ था। वर्क आर्डर के अनुसार यह कार्य 3 माह की समय सीमा में होना था। इसके अनुसार जनवरी 2024 तक यह कार्य पूर्ण हो जाना था लेकिन धीमी गति से कार्य किए जाने के कारण अभी तक आधी भी सड़क नहीं बन पाई है जिससे वार्डवासियों को बेहद परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

नगर पालिका बना रही बहाना- जब इस सड़क का कार्य समय पर पूर्ण नहीं होने को लेकर नगर पालिका अधिकारियों ने उन्होंने बहाने बनाना शुरू कर दिए। उनका कहना था कि समय सीमा में तो काम होना चाहिए लेकिन इस सड़क निर्माण के पहले पोल शिफ्टिंग और अतिक्रमण हटने में विलंब होने के कारण सड़क निर्माण कार्य देरी से हो रहा है। जानकार बताते हैं कि सडड़ निर्माण का कार्य शुरू होने से पहले ही अतिक्रमण हट गया था इसके बावजूद भी सड़क समय पर नहीं बनी।

बोले वार्डवासी खुदाई कर बनाई जाए सड़क- टैगोर वार्ड की सड़क निर्माण में सबसे बड़ा पेंच यह आ गया है कि सड़क ऊंची बन रही है और लोगों के मकान नीचे हो गए हैं जिसके कारण बारिश में सड़क का पानी लोगों के घरों में प्रवेश कर जाएगा। यही वजह है कि वार्डवासी खुदाई कर सड़क निर्माण कराने की बात कर रहे हैं। इसके लिए उन्होंने कलेक्टर को आवेदन भी दिया था। जबकि हकीकत यह है कि नगर पालिका ने ठेकेदार को जो वर्क आर्डर दिया है उसके स्टीमेट में खुदाई कर सड़क बनाने का उल्लेख ही नहीं है। इन्हीं कारणों से सड़क निर्माण का कार्य फिलहाल बंद पड़ा हुआ है।

कंचन आहूजा को मिला बेस्ट जोन चेयरपर्सन का अवॉर्ड

लायंस क्लब के रीजन कांफ्रेंस में हुआ सम्मान

बैतूल। समाजसेवा के क्षेत्र में एक अलग पहचान बनाने वाली लायंस क्लब की लायन कंचन आहूजा को लायंस क्लब के रीजन कांफ्रेंस में बेस्ट जोन चेयरपर्सन का अवार्ड दिया गया। रीजन चेयरपर्सन लायन एमजेएफ शोभा भट्ट द्वारा केसर बाग में आयोजित लायंस क्लब रीजन कांफ्रेंस में चीफ गेस्ट गवर्नर जेपीएस जौहर ने डिस्ट्रिक्ट चेयरपर्सन कंचन आहूजा को बेस्ट जोन चेयरपर्सन का अवार्ड दिया। कंचन आहूजा को यह अवार्ड उनके जोन में आने आमला, मुलताई, सारणी और बैतूल क्लबों का सुचारू रूप से मार्गदर्शन देने एवं एक नए क्लब खोलने पर दिया गया।

उल्लेखनीय है कंचन आहूजा लायंस क्लब के माध्यम से समाज सेवा करती हैं और लायंस क्लब में वाइस प्रेसिडेंट, लायन क्लब महक की प्रेसिडेंट, डिस्ट्रिक्ट चेयरपर्सन ऑफ़ क्रेस्ट, लियो क्लब एडवाइजर, स्पॉन्सर्ड ऑफ लियो क्लब अमिगोस, चार्टर्ड मेम्बर ऑफ लायंस क्लब, बोर्ड ऑफ डायरेक्टर इन क्लब, जोन चेयरपर्सन के पद पर है। रीजन कांफ्रेंस में शामिल हुए लायंस क्लब के पदाधिकारियों ने कंचन आहूजा को अवार्ड मिलने पर शुभकामनाएं देते हुए कहा कि मेहनत करने वालों की हार नहीं होती है। कंचन आहूजा ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा समाज सेवा करना मेरा जुनून है। इसलिए हमेशा समाज सेवा के लिए तत्पर रहती हूं, समाज सेवा के लिए लायंस क्लब जैसा प्लेटफार्म हर किसी को नहीं मिलता है, लायंस क्लब ने मुझे इस लायक समझा कि मेरे को महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां दी गई। मैंने उन जिम्मेदारियों को निभाने के लिए पूरी ईमानदारी से प्रयास किए।

हनुमान जन्मोत्सव की तैयारियां प्रारंभ

बच्चे हैरतअंगेज करतब का कर रहे अभ्यास

बैतूल। भगवान हनुमान जन्मोत्सव को अभी 8 दिन शेष हैं लेकिन अभी से लोगों में पर्व के लिए उत्साह दिखाई दे रहा है। हनुमान जन्म उत्सव हनुमान नगर गर्ग कॉलोनी में विगत 17 वर्षो से निरंतर धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस वर्ष शोभायात्रा की तैयारियों जोर-शोर से प्रारंभ हो गई हैं। गर्ग कॉलोनी छोटे-छोटे बच्चों भगवान श्रीराम और हनुमान जी के प्रति अपनी भक्ति और उससे मिली शक्ति की थीम पर अपने गरू मास्टर सारंग द्वारा मंदिर प्रांगण में करतब का अभ्यास कर रहें हैं। जिसे देखकर लोग सराहना के साथ आश्चर्यचकित हो रहें हैं।

नालछा के श्री सिद्धेश्वर महादेव मंदिर पर आयोजित

11 कुंडीय शिव शक्ति महायज्ञ में प्रतिदिन दी जा रही 1 लाख 51 हजार आहुतियां

निखिल ग्वाल (सुबह सवेरे) नालछा। ग्राम के चंदलाव तालाब के बीचोबीच टापू पर विराजित प्रसिद्ध श्री सिद्धेश्वर महादेव मंदिर (जुग्गा) परिसर में श्री श्री 1008 श्री राजेंद्र पूरीजी महाराज की प्रेरणा से आयोजित 11 कुंडीय शिव शक्ति महायज्ञ के आयोजन में यजमानों द्वारा प्रतिदिन प्रातः भगवान सिद्धेश्वर महादेव का रुद्राभिषेक कर महाआरती की जा रही है . वैदिक मंत्रोच्चार के साथ महायज्ञ में प्रतिदिन 1 लाख 51 हजार आहुतियां देकर सम्पूर्ण क्षेत्र में सुख समृद्धि और खुशहाली के लिए प्रार्थना की जा रही है. बाबा महांकाल की नगरी उजैन से पधारे यज्ञाचार्यो द्वारा अनुष्ठान करवाया जा रहा हे नगर के वरिष्ठ समाजसेवी मोहनलाल शर्मा और वरिष्ठ पत्रकार सुनील शर्मा द्वारा बताया कि नालछा क्षेत्र में लंबे समय बाद हो रहे महायज्ञ के आयोजन में गांव सहित पूरे क्षेत्र के श्रद्धालु भक्त शामिल होकर पुण्य लाभ ले रहे है साथ ही संत महात्माओं का सानिध्य और आशीर्वाद भी प्राप्त हो रहा है.यजमानों द्वारा महायज्ञ में आहुतियां देकर क्षेत्र में सुख समृद्धि और खुशहाली के लिए प्रार्थना की जा रही है.

देर रात्रि को हुआ तंबूरा भजन संध्या का आयोजन, 5 से अधिक भजन मंडली हुई शामिल...

आयोजन के तीसरे दिवस रात्रि में तंबूरा भजन संध्या का आयोजन किया गया जिसमे पांच से अधिक भजन मंडली के भजन गायक और कलाकारों द्वारा देर रात्रि तक भजन- कीर्तन किया गया जिसमे श्रद्धालु भक्त जमकर झूमते हुए नजर आए. इस दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालु भक्त मौजूद रहे . जानकारी श्री सिद्धेश्वर महादेव मंदिर के मुख्य पुजारी प्रसिद्ध भगवताचार्य पंडित निर्मल इंदुरकर द्वारा दी गई।

हम आज राज करने के लिए राजनीति नहीं कर रहे, हम देश सेवा के लिए राजनीति कर रहे हैं : जगदीश देवड़ा

ग्राम बरमंडल युवा चौपाल कार्यक्रम में पहुंचे उप मुख्यमंत्री देवड़ा

धार। भारतीय जनता युवा मोर्चा द्वारा आयोजित युवा चौपाल कार्यक्रम सरदारपुर विधानसभा ग्राम बरमंडल में प्रदेश सरकार के उप मुख्यमंत्री एवं वित्त मंत्री जगदीश देवड़ा ने शामिल होकर युवाओं को संबोधित किया।

अतिथियों द्वारा सर्वप्रथम पित्र पुरुष दीनदयाल उपाध्याय श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्रों पर माल्यार्पण कर युवा चौपाल का आरंभ किया । इस दौरान भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज सोमानी पूर्व विधायक वेलसिंह भूरिया विधानसभा प्रभारी नरेश राजपुरोहित, मोर्चा लोकसभा प्रभारी हिमांशु अत्रिवाल,जिला मंत्री दीपक धाकड़ युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष जय सूर्या,भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा,दीपक सिंह रघुवंशी मंचासीन रहे। युवा चौपाल को संबोधित करते हुए उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने कहा कि हम आज राज करने के लिए राजनीति नही कर रहे हम देश सेवा के लिए राजनीति कर रहे हैं। काग्रेस राज में कश्मीर को देश से अलग करने का काम किया वही भाजपा की मोदी सरकार ने देश को एक करने के लिए कश्मीर से धारा 370 हटाने का काम किया मोदी के नेतृत्व में भाजपा की सरकार में विकास हुए है वही कांग्रेस सरकार में रोज नए घोटाले होते थे । आज विश्व की अर्थव्यवस्था में भारत का स्थान पांचवे नंबर पर है। अब मोदी जी के नेतृत्व में भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भी बनने वाला है । आज पूरे विश्व में भारत का मान सम्मान बढ़ा है । भाजपा की सरकार में प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना से गांव गांव को पक्की सड़क से जोड़ने का काम किया मातृ शक्ति को सम्मान देने का काम किया और हमारा 2047 तक भारत को विकसित भारत बनाने का लक्ष्य है । हम देश को फिर से विश्व गुरु बनाने के काम में लगे हैं, 2047 तक यह लक्ष्य भी पूरा कर लेंगे । स्वागत भाषण जय सूर्या और वेल सिंह भूरिया ने दिया।

जिला भाजपा अध्यक्ष मनोज सोमानी ने कहा कि आज नरेंद्र मोदी ने देश का मान बढ़ाया है। अब हमारी बारी हे की लोकसभा में भाजपा के प्रत्याशी को जीता कर हम मोदी जी को फिर से प्रधानमंत्री बनाए और देश को मजबूत बनाए।

इस दौरान कार्यक्रम में जिला पंचायत सदस्य गायत्री पुरोहित, शुभम दीक्षित, ओपी मेहता, रिषभ परिहार, जितेन्द्र मारु, मयंक जायसवाल, स्वेता चौधरी सहित अनेक युवा मोर्चा कार्यकर्ता उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन मंडल अध्यक्ष मुकेश शर्मा ने किया व आभार गायत्री पुरोहित ने माना। जानकारी भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने दी।

'हीरामंडी' से 14 साल बाद फरदीन खान की वापसी

अभिनेता फरदीन खान ने अपनी आने वाली वेब सीरीज 'हीरामंडीः द डायमंड बाजार' के जरिए बतौर अभिनेता 14 साल बाद कमबैक किया है, जिसे लेकर वह भावुक हो गए। संजय लीला भंसाली की फिल्म 'हीरामंडी- द डायमंड बाजार' में मनीषा कोइराला, सोनाक्षी सिन्हा, अदिति राव हैदरी, शर्मिन सहगल, ऋचा चड्ढा और संजीदा शेख जैसे कलाकार शामिल हैं। हीरामंडी- द डायमंड बाजार में फरदीन खान भी अहम भूमिका में नजर आएंगे। फरदीन खान 14 साल बतौर अभिनेता वापसी कर रहे हैं। फरदीन खान अंतिम बार वर्ष 2010 में प्रदर्शित फिल्म दुल्हा मिल गया में बतौर अभिनेता नजर आए थे। इस फिल्म में फरदीन खान के साथ सुष्मिता सेन ने भी अहम भूमिका निभाई थी।

फरदीन खान 'हीरामंडी' के जरिए 14 साल बाद बतौर अभिनेता कमबैक करने को लेकर भावुक हो गए। फरदीन खान ने कहा, मैं खुद को बहुत लकी मानता हूं कि दोबारा से मुझे आप सबसे जुड़ने का और फिल्म इंडस्ट्री में वापसी करने का अवसर मिल रहा है। यह पल मुझे बहुत इमोशनल करने वाला है। संजय लीला भंसाली और नेटफ्लिक्स का बहुत-बहुत आभारी हूं, जो मुझे ये मौका मिला।

'हीरामंडी' वेश्याओं और उनकी जिंदगी को लेकर बुनी गई है। वर्ष 1940 के दशक के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की उथल-पुथल भरी पृष्ठभूमि पर आधारित हीरामंडी, कोठों में प्यार, विश्वासघात, उत्तराधिकार और राजनीति की कहानी को बयां करती है। हीरामंडी- द डायमंड बाजार 1 मई 2024 को ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर रिलीज हो रही है।

'चंदू चैंपियन' से कार्तिक ने सीखी खास बात

साजिद नाडियाडवाला और कबीर खान द्वारा को-प्रोड्यूस की गई फिल्म 'चंदू चैंपियन' इस साल की सबसे बड़ी फिल्म होने का वादा कर रही है। यह कहना गलत नहीं होगा कि फिल्म का कैनवास बड़ा है और कहानी भी दिलचस्प है। इसके अलावा इस फिल्म के साथ, कार्तिक आर्यन अपने कभी न देखे गए अवतार में नजर आने वाले हैं, जिसे देखना दर्शकों के लिए बेहद मजेदार होने वाला है। सुपरस्टार अपने किरदार को परफेक्ट बनाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं, और देखो, यह उनकी असल जिंदगी को भी पॉजिटिवली प्रभावित कर रहा है। जी हां! अब, वो एक फिटनेस फ्रीक बन चुके हैं। इससे तो लग रहा है कि ऑन-स्क्रीन और ऑफ-स्क्रीन धूम मचाने वाला है!

कार्तिक आर्यन का डेडिकेशन 'चंदू चैंपियन' के किरदार को परफेक्ट बनाने के लिए सभी को प्रभावित कर रहा है। दुनिया भर में फिल्म को लेकर खूब चर्चा हो रही है। चाहे वो चौंकाने वाला उनका बॉडी ट्रांसफॉर्मेशन हो, या फिर भाषा को बोलने की कड़ी प्रैक्टिस हो, सुपरस्टार सच में इस फिल्म में अपना दिल और जान लगा रहे हैं। ट्रेनिंग का असर लगता है कि कार्तिक की रियल लाइफ में भी देखने मिल रहा है, क्योंकि वो एक फिटनेस फ्रीक बन चुके हैं। वे अब रेगुलर वर्कआउट कर रहे हैं। इस तरह से उन्हें कई बार जिम के बाहर देखा जाता है।

इससे पता चलता है कि कार्तिक का डेडीकेशन कितना गहरा है लेकिन यह भी दिखता है की फिल्म का सुपरस्टार की लाइफ पर क्या असर पड़ रहा है। यह सच में कार्तिक की करियर में एक खास फिल्म बनने वाली है। जिसे पेश करने के लिए जितने मेकर्स और कास्ट उत्साहित हैं, उतना ही उसे देखने के लिए दर्शकों के बीच में भी उत्सुकता बनी हुई है। साजिद नाडियाडवाला और कबीर खान द्वारा साथ प्रोड्यूस की गई 'चंदू चैंपियन' को 14 जून को रिलीज किया जाएगा। इसके साथ ही यह तैयार है दुनिया भर के दर्शकों के दिलों पर अपनी गहरी छाप छोड़ने के लिए।

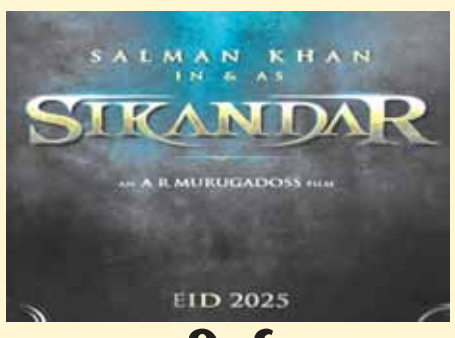

अगली ईद पर सलमान 'सिकंदर' बनकर लौटेंगे

सलमान खान की इस साल ईद के मौके पर अपनी कोई फिल्म रिलीज नहीं हुई। इस बार अजय देवगन और अक्षय कुमार ने ईद के दिन अपनी फिल्में रिलीज की। दर्शकों का मानना है कि बिना सलमान की फिल्म के ईद फीकी लगती हैं। ऐसे में कई लोग इस बात से दुखी भी हुए। इस बीच सलमान खान ने अपने फैंस पर ईद पर धमाकेदार तोहफा दिया है। सोशल मीडिया पर सलमान खान की एक पोस्ट जमकर फैली। इस पोस्ट को देखने के बाद भाईजान के फैंस की खुशी सातवें आसमान पर पहुंच गई।

सलमान खान ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट को अपडेट करते हुए एक पोस्ट शेयर किया है। इसके जरिए सलमान ने अपनी अपकमिंग फिल्म के टाइटल से पर्दा उठा दिया। सुपरस्टार सलमान खान ने ईद की बधाइयां देने के साथ अपने फैंस खुश भी कर दिया। सलमान खान की अगली मूवी सिकंदर साल 2025 में ईद के मौके पर सिनेमाघरों में रिलीज होगी। इस मूवी के लिए सलमान ने डायरेक्टर ए आर मुरुगदॉस से हाथ मिलाया है।

साल 2023 में सलमान खान की फिल्म 'टाइगर-3' रिलीज हुई थी, जिसे लोगों ने भरपूर प्यार दिया था। इस फिल्म में सलमान खान ने जमकर ऐक्शन किया था। फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर भी छप्पर फाड़ कमाई की थी। सलमान खान की ये मूवी हिट साबित हुई थी। अब बॉलीवुड के भाईजान फिल्म 'सिकंदर' से वापसी करने वाले हैं।

रियल बॉक्स

सिनेमा से गजल का गुलशन उजड़ने क्यों लगा!

हेमंत पाल
लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

हिंदी फिल्मों का सौ साल का इतिहास काफी गौरवशाली रहा है। इसमें गीत-संगीत का भी अपना अलग योगदान रहा। खय्याम और मदन मोहन जैसे संगीतकारों ने संगीत को शायरना बनाया और अमर संगीत दिया। लेकिन, आज की फिल्मों के संगीत में गजल, नज्म और शायरी कम हो गई। जबकि, गजल हमेशा ही संगीत का अहम हिस्सा रही। पहले की शायरी पर अरबी का प्रभाव ज्यादा था, पर आज की शायरी की जुबान जुदा है। नए जमाने की शायरी में उर्दू के साथ हिंदी भी है, जो इसे आम लोगों से जोड़ती है। गजल गायकी का अपना अलग ही पारंपरिक रंग है और वही उसकी खूबसूरती भी है। यह बात अलग है कि गायकों ने अपनी अलग शैली से गजल को लोकप्रिय बनाया। जगजीत सिंह और पंकज उधास की अपनी शैली थी, उस कमी को पूरा कर पाना मुश्किल है।

सिनेमा में संगीत कई रूपों में सुनाई देता रहा। दर्शकों ने गीतों से लगाकर शास्त्रीय संगीत तक और कव्वाली से गजल तक को परदे पर अवतरित होते देखा। इनमें दर्शकों ने सबसे ज्यादा सुना गीतों को, जो कभी रोमांस तो कभी किसी और रूप में सुनाई दिए। लेकिन, संगीत का सबसे खूबसूरत रूप गजल धीरे-धीरे बिल्कुल विलुप्त हो गया। सिनेमा में आए बदलाव ने गजल को खो सा दिया। एक दशक पहले जगजीत सिंह के दुनिया से चले जाने के बाद तो जैसे गजल को भुला ही दिया और अब पंकज उधास के बाद तो गजल के फिर परदे पर आने की संभावना खत्म हो गई। हिंदी सिनेमा की पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' (1931) के बाद से ही गजल फिल्म संगीत का आधार बनी। 19वीं से 20वीं शताब्दी के शुरुआती दौर में फ़िल्मी ग़ज़लों की जड़ें उर्दू पारसी थिएटर में भी थी। 1930 से 1960 के दशक तक गजल ही फ़िल्म संगीत की ख़ास शैली रही। बाद में यह दौर घटता गया, लेकिन 1980 के दशक तक चलता रहा। इसके बाद तो फिल्म संगीत में ग़ज़ल हाशिए पर चली गई। खय्याम और मदन मोहन जैसे संगीत निर्देशकों ने 1960 और 1970 के दशक में कई फिल्मी गजलों की रचना की। परंतु, उनकी परंपरा को दूसरे संगीतकारों ने नहीं अपनाया।

कानों से दिल में उतरने वाली गजल मख़मली शब्दों से सजी गीत की वो विधा है, उसने सिनेमा को बरसों तक अपने असर से सराबोर किया। फिल्म संगीत के पन्नों को खंगाला जाए, तो पिछली सदी के चौथे दशक में फिल्मों के लिए पहली ग़ज़ल फिल्म 'दुनिया न माने' के लिए शांता आप्टे ने गाई थीं। 'दिखाई दिए यूं के बेखुद किया, हमें आपसे भी जुदा कर चले!' मीर तकी मीर की ये ग़ज़ल बाद में 'बाजार' (1982) फिल्म में भी सुनाई दी। सोहराब मोदी की फिल्म 'मिर्जा गालिब' में तलत महमूद और सुरैया की गाई गजलों को भी काफी पसंद किया गया। बाद में शकील बदायूंनी, हसरत जयपुरी, मजरुह सुल्तानपुरी, साहिर लुधियानवी, नक्श लायलपुरी, जावेद अख्तर, निदा फाजली, गुलजार, गोपालदास नीरज जैसे कई नामी शायरों और गीतकारों ने फिल्म जगत को बेहतरीन ग़ज़लें दी। लेकिन, ग़ज़ल का जनक मीर तक़ी मीर को माना जाता है। उनकी लिखी कुछ ग़ज़लें फिल्मों में आज भी सुनाई दे जाती हैं। 'बाजार' फिल्म की ग़ज़ल 'दिखाई दिए यूं के बेखुद किया हमें आपसे भी जुदा कर चले' ये ग़ज़ल मीर की ही देन है। खय्याम के संगीत में लता मंगेशकर की आवाज ने इसमें चार चांद लगाए। मीर के साथ ग़ालिब, मोमिन खान, फैज़ अहमद फैज़, साहिर लुधियानवी की ग़ज़लों ने भी हिंदी फ़िल्मों में अपने रंग बिखेरे। जगजीत सिंह की गायी 1999 में आई फिल्म 'सरफ़रोश' की गजल 'इश्क़ कीजे फिर समझिए ज़िंदगी क्या चीज़ है' ने दर्शकों को मानो डुबो ही दिया था। निदा फ़ाज़ली की इस ग़ज़ल ने फिल्म के हीरो आमिर खान और हीरोइन सोनाली बेंद्रे के बीच प्रेम की स्वीकृति को जाहिर किया।

गीतकार और लेखक जावेद अख़्तर की 1982 में आई फ़िल्म 'साथ-साथ' की ग़ज़ल 'ज़िंदगी धूप तुम घना साया' सुनने वाले के मन को अजीब सा सुकून देती है। 'तुमको देखा तो ये ख्याल आया, ज़िंदगी धूप तुम घना साया!' ये पंक्ति जब जगजीत सिंह ने अपनी सुरमयी आवाज में ये गजल पिरोई थी, तो प्रेम के अलग ही रूप का अहसास हुआ। इसी फिल्म में 'ये तेरा घर, ये मेरा घर' की पंक्तियों को सुरेश वाडेकर ने अपनी आवाज से अमर कर दिया। यह ग़ज़ल एक छोटे से घर में दो प्रेमियों को उत्साह और उम्मीद से भर देती है। इस ग़ज़ल के बोल अभाव में भी भावनाओं का बोध कराते हैं। 'फिर छिड़ी रात बात फूलों की, रात है या बारात फूलों की तलत अजीज की आवाज में 'बाजार' फिल्म की मखदुम मोहिउद्दीन की रचित यह ग़ज़ल आज भी सुबह सुनाई दे जाए, तो दिनभर जहन में गूंजती है। यह गजल समय के झीने परदे को तार-तार करते हुए रोमांस के ताजा पन का अहसास कराती है।

फ़िल्मी दुनिया में गुलजार गीतकारों की दुनिया में वो शख्सियत है, जो अपने शब्दों को कहीं भी इस तरह पिरो देते हैं कि लगता है, जैसे वो शब्द उन्हीं पंक्तियों के लिए बने हैं। उन्होंने अमीर खुसरो की गजल से प्रेरित होकर 1985 में आई फिल्म 'गुलामी' के लिए एक गाना लिखा था, जो आज भी उतना ही पसंद किया जाता है। गुलजार ने इस गजल की शुरुआती लाइनों के भाव को अपने गाने 'ज़े-हाल-ए मिस्कीं मकुन बरंजिश' में पिरोया था। इस गीत के शुरुआती फ़ारसी में लिखे बोल का अर्थ समझे बिना सुनने वाले इसके भाव को आज भी दिल से महसूस करते हैं। गाने की शुरुआती पंक्तियां 'जे-हाल-ए-मिस्कीं मकुन बरंजिश, बेहाल-ए-हिज्राँ बेचारा दिल है, सुनाई देती है जिसकी धड़कन, तुम्हारा दिल या हमारा दिल है!' फारसी और ब्रजभाषा की इस गजल की शुरुआती दो पंक्तियों का अर्थ है 'बातें बनाकर और नजरें चुराकर मेरी लाचारी की अवहेलना न कर, जुदाई की अगन से जान जा रही है, मुझे अपनी छाती से क्यों नहीं लगा लेते!' इस गीत में प्रेम की गहराई को खूबसूरती से शब्दों में बयां किया गया। लेकिन, किसी ने इसका गूढ़ अर्थ जानने की कोशिश नहीं की और उसकी जरुरत भी नहीं समझी गई। क्योंकि, जो कानों में रस घोलकर दिल को सुकून दे, वही अच्छा गीत या गजल है।1987 में आई फिल्म 'इजाजत' में गुलजार की लिखी गज़ल 'मेरा कुछ सामान तुम्हारे पास पड़ा है, सावन के कुछ भीगे-भीगे दिन रखे हैं और मेरे एक खत में लिपटी रात पड़ी है!' प्रेम और उसकी समर्पण अनुभूति को चरम सीमा पर ले जाकर मन को गहरा ठहराव देती है। 1982 की फिल्म 'अर्थ' में कैफी आजमी की लिखी गज़ल 'तुम इतना जो मुस्कुरा रहे हो, क्या ग़म है जिसको छुपा रहे हो!' जगजीत सिंह की आवाज में प्रेम और उसके भावों को काफी लंबा आयाम देती है। प्रेम में गम और दुख की बयार को इससे बेहतर कोई और गज़ल पेश नहीं कर सकती।

हिंदी फिल्मों में गज़लों को बेहतरीन गायकों ने हसीन मुकाम दिया है। जिनमें तलत महमूद, सुरैया, गुलाम अली, जगजीत सिंह, तलत अजीज, नुसरत फतेह अली खान प्रमुख हैं। फिल्मों में हमेशा गज़ल को महफ़िल के माहौल में दर्शाया जाता है और उसका पिक्चराइजेशन भी गम और उसकी संजीदगी को आधार बनाकर किया जाता है। गहरी सोच के साथ ऐसी पेशगी गजलों का मन में दूर तक असर करती है। बहुत ही भावुक और प्यार भरे शब्दों के जरिए गायक इसे शब्दों में पिरोते हैं। नयी फिल्मों के गीत-संगीत पर काफी लोग अपनी नाराजगी व्यक्त करते रहते हैं लेकिन नई फिल्मों में भी गज़ल की उपस्थिति एक हद तक लोगों की नाराजगी को दूर करने में कामयाब हो रही है।

हिंदी फिल्मों में गजलों की बात करें और 'पाकीजा' तथा 'उमराव जान' की गजलों का जिक्र न हो, यह संभव नहीं है। इन फिल्मों की गज़लें सदैव जवां रहकर मन को महकाती रहेंगी। 1981 की फिल्म 'उमराव जान' में प्रसिद्ध शायर शहरयार की ग़ज़ल 'दिल चीज है क्या आप मेरी जान लीजिए, बस एक बार मेरा कहा मान लीजिए!' इस गजल ने मन को एक लंबी सिरहन से भर दिया था। इसका अंतिम अंतरा मन को दुनिया के संघर्षों से लड़ने की असीम शक्ति देता है। इसके अलावा 'उमराव जान' में ही 'इन आँखों की मस्ती के मस्ताने हजारों हैं' तथा 'जुस्तजू जिसकी थी, उसको तो न पाया हमने' गजलों ने भी हिंदी फिल्मों में काफी लोकप्रियता हासिल की है। इस शब्द लोकप्रियता का आलम यह है कि 1964 में 'ग़ज़ल' नाम से एक फिल्म भी बनी। इसका निर्देशन वेद-मदन ने किया और इसमें सुनील दत्त, मीना कुमारी, रहमान और पृथ्वीराज कपूर मुख्य भूमिकाओं में थे। इसमें मदन मोहन का संगीत और साहिर लुधियानवी के गीत हैं। यह फिल्म कई गज़लों के लिए प्रसिद्ध है। मोहम्मद रफ़ी की गायी 'रंग और नूर की बारात' और लता मंगेशकर का गाया 'नगमा-ओ-शेर की सौगात' काफी लोकप्रिय हुई। लेकिन, अब लगता है फिल्म संगीत का वो खुशनुमा दौर समाप्ति की तरफ बढ़ रहा है!

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

सिनेमा में भी उपेक्षित ही रहा है समाज का उपेक्षित वर्ग

अशोक जोशी

आज 14 अप्रैल को अंबेडकर जयंती है। संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने हमारे देश को जाति प्रथा तथा जातिगत भेदभाव को समाप्त करने के लिए संविधान में कई प्रावधान रखे। अलग-अलग

सरकारों ने भी समाज के पिछड़े और दलित वर्ग को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए अपनी अपनी तरह से प्रयास भी किए। इसके बावजूद सामाजिक असमानता पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। समाज की इसी असमानता को हिंदी फिल्मों में भी समय-समय पर फिल्मकारों ने अपनी फिल्मों का विषय बनाया। 'अछूत कन्या' से शुरू हुआ यह सिलसिला अभी भी कायम है।

समाज के दबे-कुचले विषय की शुरुआत आजादी से पूर्व हिंदी फिल्मों के शैशवकाल से ही हो गई थी। तब 1936 में अशोक कुमार और देविका रानी की फिल्म 'अछूत कन्या' प्रदर्शित हुई। यह फिल्म अपने विषय से ज्यादा अशोक कुमार और देविका रानी की जोड़ी के कारण सफलता की सीढ़ी पर चढ पायी थी। उसके बाद 1946 में चेतन आनंद ने 'नीचा नगर' नाम से फिल्म बनाई, जिसे कान फिल्म फेस्टिवल के बेस्ट फिल्म अवार्ड (पाम डी ओर) से नवाजा गया। 'नीचा नगर' गोर्की की 1902 की रचना 'द लोअर डेप्थ्स' पर आधारित है। इस फिल्म में गरीबों और समाज के दलित वर्ग के एक इलाके में आने वाली साफ पानी की पाइप लाइन को वहां का एक दबंग बंद कर देता है। इससे बस्ती में पानी को लेकर हाहाकार मच जाता है और वहां के लोग गंदा पानी पीकर बीमार हो जाते हैं और लोग मरने लगते हैं।

1959 में प्रदर्शित बिमल राय की फिल्म 'सुजाता' समाज की उस गलत मानसिकता को दिखाने की कोशिश करती है, जो समाज को खोखला कर रहा है। यह फिल्म उस मानसिकता को गलत भी साबित करती है। ये फिल्म समाज में एक संदेश देती है कि छुआछूत आपका भ्रम है। भगवान ने सबको एक जैसा ही बनाया है। फिल्म अंतरजातीय विवाह के लिए भी लोगों को प्रेरित करता है। फिल्म में नूतन ने गरीब अनाथ और पिछड़ी जाति की युवती की भूमिका पूरी शिद्दत के साथ निभाई थी।

1973 में प्रदर्शित निर्देशक श्याम बेनेगल की फिल्म 'अंकुर' में एक पूरे वर्ग के साथ हो रहे भेदभाव का मार्मिक रूप से चित्रण किया है। श्याम बेनेगल की ये पहली फीचर फिल्म थी जिसने तीन राष्ट्रीय पुरस्कार भी जीते। श्याम बेनेगल के निर्देशन में बनी इस फिल्म में शबाना ने एक शादीशुदा नौकरानी लक्ष्मी का किरदार निभाया है। लक्ष्मी को गांव में अपने जमींदार पिता का व्यापार आगे बढ़ाने आए कॉलेज के एक छात्र सूर्या से प्रेम हो जाता है। लक्ष्मी गर्भवती हो जाती है, ऐसे समय में सूर्या उसका साथ छोड़ देता है। 1984 में आई 'दामुल' बिहार के गरीब ग्रामीणों के प्रवास के मुद्दे को उजागर करती है। डायरेक्टर प्रकाश झा की फिल्म 'दामुल' ऐसी पिछड़ी जाति के मजदूर की कहानी है, जिसको अपने भू-स्वामी के लिए चोरी करने के लिए मजबूर किया जाता है। फिल्म में अनु कपूर, श्रीला मजुमदार, मनोहर सिंह, दीप्ति नवल और रंजन कामथ मुख्य भूमिका में है।

'आरक्षण' साल 2011 में रिलीज हुई एक ऐसी हिंदी फिल्म है, जो देश में व्याप्त आरक्षण के गंभीर मुद्दे पर बनाई गई थी। फिल्म में अमिताभ बच्चन, सैफ अली खान, दीपिका पादुकोण और मनोज बाजपेयी मुख्य भूमिका में नज़र आए थे। फिल्म का निर्देशन प्रकाश झा ने किया था। बड़े सितारों और अच्छे निर्देशन के बाद फिल्म बॉक्स आफिस पर कोई कमाल नहीं दिखा पायी। निर्माता निर्देशक संजीव जायसवाल की 2012 में प्रदर्शित फिल्म 'शूद्र - द राइजिंग' देश के उन 25 करोड़ लोगों की कहानी है, जो सदियों से जुल्म सह रहे हैं। इस फिल्म में दलितों को उनके मूल अधिकारों से वंचित किए जाने की समस्या को प्रभावी ढंग से उठाया गया। लेकिन, यह फिल्म भी सफलता से वंचित ही रही।

निर्देशक नीरज घेवान की फिल्म 'मसान' 2015 में रिलीज हुई थी। 'मसान' की कहानी बनारस के घाटों पर रची-बसी है। इस फिल्म में एक छोटे से कस्बे के चार लोगों की कहानियां दिखाई गई। उन्हीं में से एक कहानी श्मशान घाट में काम करने वाले दीपक (विक्की कौशल) की है, जो निचले वर्ग यानी डोम जाति से ताल्लुक रखता है। दीपक को मृत शरीर जलाने और क्रिया कर्म के काम से नफरत है और इससे छुटकारा पाना चाहता है। इस फिल्म के जरिए सभी बाधाओं के खिलाफ आशा की कहानी दिखाई गई है। फिल्म में विक्की कौशल, रिचा चड्ढा, संजय मिश्रा, श्वेता त्रिपाठी और विनीत कुमार मुख्य भूमिका में थे।

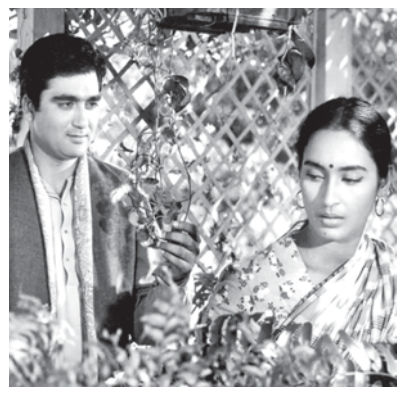

2016 में रिलीज हुई मराठी फिल्म 'सैराट' ने बॉक्स ऑफिस पर तगड़ी कमाई की। 4 करोड़ के बजट में बनी इस फिल्म ने करीब 110 करोड़ रुपए से ज्यादा की कमाई की। इस फिल्म में दलितों से नाइंसाफी की कहानी को प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया गया था। इसके एक साल बाद 2017 में प्रदर्शित अनुराग कश्यप की फिल्म 'मुक्काबाज' में जातिवाद की जड़ों को खेलकूद की प्रतियोगिता तक दिखाया गया। इस फिल्म में एक दलित बॉक्सर श्रवण कुमार (विनीत श्रीनेट) की कहानी दिखाई गई, जिसे हर रोज अपने कोच और स्थानीय बॉक्सिंग फेडरेशन संचालक के हाथों अपमानित होना पड़ता है। लेकिन, श्रवण कुमार अपनी काबिलियत के दम पर बॉक्सिंग में कामयाबी हासिल करता है। अच्छे विषय और बेहतर निर्देशन के बावजूद दर्शकों ने इसे नकार दिया था।

2021 में आई फिल्म जय भीम' इरुलुर आदिवासी समुदाय और उनके साथ सालों से हो रही बर्बरता की कहानी दिखाती है। यह फिल्म 1993 में तमिलनाडु में हुई सच्ची घटना पर आधारित है। जिसमें जस्टिस के चंद्रू का लड़ा गया केस दर्शाया गया है। जय भीम में पुलिस के अत्याचारों को भी दिखाया गया है।.यह फिल्म सामाजिक व्यवस्था पर भी तंज कसती है। इस फिल्म में सूर्या ने वकील चंद्रू और लिजोमोल जोस ने सेनगानी के किरदार को शानदार तरीके से निभाया। वहीं निर्देशक टीजे ज्ञानवेल ने कोर्टरूम ड्रामा को भी काफी अच्छी तरीके से फिल्माया है। फिल्म जय भीम में मणिकंदन, राजिशा विजयन, प्रकाश राज और राव रमेश जैसे कलाकार मुख्य किरदार में नजर आए हैं.

दो साल पहले 2022 में प्रदर्शित 'फ्रैंडी' फिल्म में जब्या नाम का एक लड़का कथित नीची जाति से संबंध रखता है। इसलिए वो और उसका परिवार गांव के बाहर रहता है। जब्या के पिता छोटे मोटे काम करते हैं, जिसमें सुअर को पकड़ना भी शामिल है। वहीं जब्या सबसे अपनी पहचान छिपाता फिरता है। वो अपने स्कूल में पढ़ने वाली एक ऊंची जाति की लड़की शालू से एकतरफा प्यार करने लगता है। फिल्म के आखिरी में समाज की उन लोगों की सोच पर पत्थर फेंक कर मारा जाता है, जो आज भी दलितों का शोषण करते हैं और छोटी सोच रखते हैं।

फिल्म अभिनेताओं में ब्राह्मण कुल में पैदा मिथुन चक्रवर्ती ऐसे अभिनेता हैं जिन्हें पर्दे पर सबसे ज्यादा बार आदिवासी, शूद्र और अछूत बताया गया है। अपनी पहली ही फिल्म 'मृगया' में मिथुन ने एक आदिवासी युवा का अभिनय इतने सशक्त तरीके से निभाया था कि उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। इसके बाद उन्होंने बोनी कपूर की फिल्म हम पांच में उसी तरह की भूमिका कर नाम कमाया। उनके इस स्वरूप को देखकर राकेश रोशन ने उन्हें जाग उठा इन्सान में एक बार फिर अछूत बनाया लेकिन यह फिल्म चल न सकी।

अछूत और उपेक्षित वर्ग को फिल्म में सहायक विषय बना मीना कुमार और राजकपूर की फिल्म 'चार दिल चार राहें' का निर्माण ख्वाजा अहमद अब्बास ने किया। लेकिन, यह फिल्म चल न सकी। सावन कुमार ने काला रंग पोत कर गोरे डॉक्टर श्रीराम लागू को 'सौतन' में हरिजन बनाने की हास्यास्पद कोशिश की। यह फिल्म अपने विषय के बजाए चाय पर बुलाया है जैसे गीत के कारण ज्यादा लोकप्रिय हुई। यदि सुजाता, चक्र, पार और अर्जुन को छोड़ दिया जाए तो आदिवासियों और अनुसूचित जाति जनजातियों पर बनी ज्यादातर फिल्में सतही ही साबित हुई हैं और सिनेमा में भी उपेक्षित वर्ग उपेक्षित ही रहा।

'हर आदमी में होते हैं कई आदमी!'

प्रकाश पुरोहित

उन दिनों यानी 1986 में पी साप्ताहिक हुआ करता था, जिसमें एक पन्ना फिल्मी होता था। आज की तरह तब ना तो इंटरनेट था और ना ही मोबाइल फोन! टेलिफोन ही मुश्किल से मिलते थे। अपना फोन सुनने के भी तब पैसे देने पड़ते थे। तब मुंबई में किसी युवा फिल्मी पत्रकार की तलाश थी, जो कम से कम पारिश्रमिक में पी के लिए हर हफ्ते लिफाफा भर के खबर और ब्लैक-व्हाइट चित्र भेज सके। तब भी ज्यादातर युवा इसी उम्मीद में मुंबई आते थे कि फिल्म लिखने को मिल जाएगी। इसको जिलाये रखने के लिए पत्रकार हो जाते थे कि बंबई में हिंदी वाले कम ही मिलते थे।

इसी खोज के तहत किसी ने एक नाम सुझाया-संजय निरुपम! बिहार से आया, खामोश-सा युवा, जिसकी इंग्लिश का कमजोर होना, उसे अति-विनम्र बनाता था। दस बात कहें तो एक जवाब मिलता था, और वह भी सिर्फ मुस्कुराते हुए। तय हुआ दो सौ रुपए महीना देंगे, और माह में चार लिफाफे हमें मिलेंगे। संजय भी फिल्मी लेखक होने के इरादे से आया था, लेकिन मुखर नहीं था, तो बात करने में भी हिचकता था। पत्रकारिता तो बंबई में टिके रहने के लिए करनी ही थी। इस बीच, एक-दो बार संजय का इंदौर आना-जाना

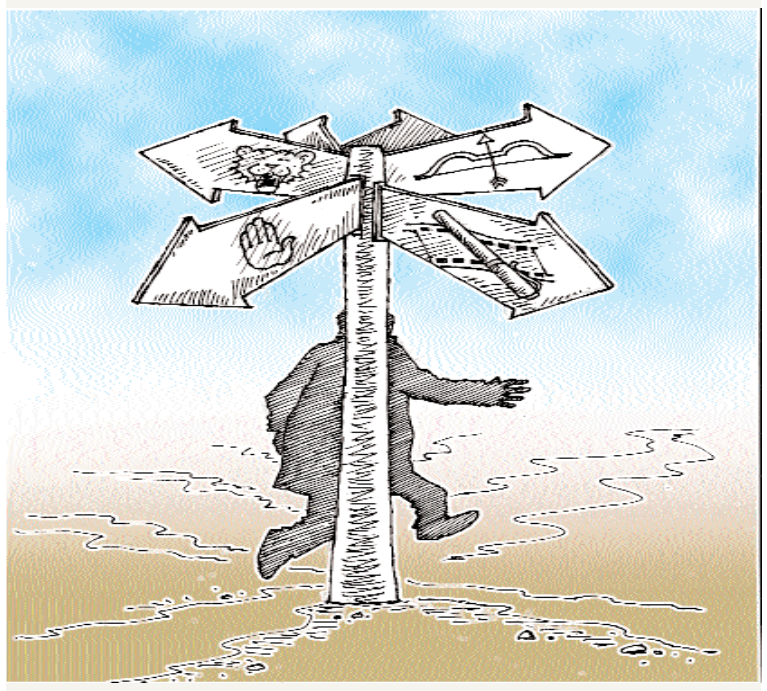

भी हुआ और रिश्ते भी बनते गए!

इसी बीच, संजय ने गीता से भी मिलवाया, जो इंदौर की ही थी और बंबई में फिल्मी पत्रकार थी। दोनों ही मिल-जुल कर साप्ताहिक के लिए खबर और चित्र भेजने लगे। तभी एक बार संजय और गीता इंदौर आये और बताया कि दोनों शादी करना चाहते हैं। दिक्कत यह थी कि दोनों की जाति अलग-अलग थी और उन दिनों संजय का परिवार इस रिश्ते से खुश नहीं था, जबकि गीता का परिवार तैयार था। गीता के परिवार में संजय को खूब इज्जत मिलती थी और प्यार भी।

ऐसे ही शादी की तारीख तय हो गई। गीता का तो परिवार था, लेकिन संजय का परिवार तो बिहार में था। संजय का इंदौर में कोई परिचित भी नहीं था। इसलिए यह तय पाया गया कि मेरे घर से ही इनकी शादी हो जाए। कह सकते हैं जनवासा हमारा घर था और यहीं से बरात निकली थी। जिससे जो मदद हो सकी, उसने किया और संजय को घर की कमी नहीं खलने दी। तब दादा (ओमप्रकाशजी सोजतिया) ने भी हर संभव इंतजाम किये थे, कि उनके ही समाचार पत्र का संवाददाता है, इसलिए नहीं, बल्कि मदद करने की उनकी आदत थी और संजय को तो देख कर ही प्यार आने लगता था।

शादी अच्छे से हो गई और वर-वधू बंबई चले गए, पी के लिए उनका लिखना जारी रहा। जब भी इंदौर आते तो मेरे यहां जरूर आते, तब लगता था कि मुंह में दही जमाए बैठा यह शख्स बंबई गलत आ गया...! फिर 1991 में पी शाम का समाचार-पत्र बन गया, तब भी संजय ही खबर भेजता था। फिर धीरे-धीरे उसका फिल्मवालों से रिश्ता बनने लगा। वह तेज-तर्रार तो नहीं था, लेकिन उसकी मासूमियत पर फिदा हुआ जा सकता था। बाद में पता चला देव आनंद के लिए कोई फिल्म (ज्वेल-थीफ रिटर्न जैसी) लिख रहा है और उसे छुटपुट काम फिल्मों में लिखने के मिलने लगे थे।

तभी **'जनसत्ता'** लगभग बंद होने के कगार पर था और पता चला संजय राऊत के कहने पर संजय को बाल ठाकरे ने हिंदी 'सामना' का संपादक बना दिया। फिर तो संजय, संजय ही नहीं रहा, संजय निरुपम हो गया। राज्यसभा सांसद और फिर ना जाने क्या-क्या। मुंबई के बिहारियों का नेता, जिसने लोकसभा चुनाव भी जीत लिया। आखिरी बार मेरी मुलाकात संजय से 'सामना' के दफ्तर में ही हुई थी, तब देखा... यह तो एकदम नेता हो गया। लोग आ रहे हैं और पैर छू रहे हैं, उसके चेहरे के अंदाज बदल गए और रहन-सहन भी। बिल्कुल नेतागीरी के लिए एकदम माफिक इंसान। तब मैंने इतना ही कहा था कि 'जाना था तो कांग्रेस में ही चले जाते', तब भी उसने हंस कर कहा था कि जिसने बुला लिया प्यार से, आ गया।

बाल ठाकरे नहीं रहे और उद्धव ने काम सम्हाला। जो संजय राऊत कभी संजय निरुपम को लेकर 'सामना' में आए थे, उन्होंने ही जड़ें खोदनी शुरू कर दीं और अंततः संजय निरुपम को कांग्रेस ने हरी झंडी दिखा दी। मुंबई का कांग्रेस अध्यक्ष बना दिया। जयपुर अधिवेशन में संजय के जलवे देखे थे मैंने। उसके बाद अभी जब रायपुर में उसे देखा तो लगा था, जैसे पानी उतर रहा है, उसके आसपास वैसी भीड़ नहीं थी। तब भी यह यकीन नहीं हो रहा था कि फिर शिवसेना में जाने की नौबत आ जायेगी और वह भी शिंदे के साथ।

कांग्रेस ने संजय को खूब दिया और अब बदले में कोस रहा है और खामियां बता रहा है। वजह यही है कि राजनीति में संजय किसी विचारधारा की वजह से नहीं गया था, मगर उसे वहां अवसर नजर आ रहे थे। कल को कांग्रेस के दिन फिर गए तो संजय को वहां भी दुबारा जाने में हिचक नहीं होगी, क्योंकि अब उसे इसकी आदत हो गई है और बाकी दलों को भी।

आज ये बातें याद करने का मकसद यही है कि क्या राजनीति ही ऐसी होती है कि व्यक्ति का चाल-चलन-चरित्र बदल देती है... या फिर उसमें ये (अव)गुण पहले से विद्यमान रहते हैं कि मौके की तलाश में रहते हैं और खाद-पानी मिलते ही वैसे उग आते हैं, जैसे छोटे-से बीज से वट-वृक्ष बन जाता है! निदा फाजली ने ऐसे ही मौके पर लिखा होगा... हर आदमी में होते हैं कई आदमी/जिसको भी देखना हो, कई बार देखना!

और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

द एवरेस्ट गर्ल : अथक संघर्ष की कहानी

एक साधारण लड़की की असाधारण कहानी लेकर पत्रकार ब्रजेश राजपूत पुनः हाज़िर है (हालांकि मुझे साधारण शब्द से आपत्ति है क्योंकि जिसने इतना असाधारण काम किया वो साधारण कैसे हो सकती है)। पुस्तक के बारे में जानकारी देने से पहले कलमकार के बारे में थोड़ी चर्चा हो जाये। ब्रजेश राजपूत टीवी मीडिया के पत्रकार है। एबीपी न्यूज से काफी लंबे समय से जुड़े है आपने पत्रकारिता में पी.एच.डी. भी की है। आपको रामनाथ गोयनका एक्सीलेंस इन जर्नलिज़्म अवॉर्ड 2017 और मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी 218 में किताब ऑफ द स्क्रीन पर अवॉर्ड मिल चुका है। इसके अलावा मुंबई प्रेस क्लब का रेड इंक अवार्ड और दो साल से ई.एन.बी.ए. अवॉर्ड रिपोर्टिंग के लिये मिला है। मैं उनकी 'ऑफ द स्क्रीन' से बहुत प्रभावित हुई थी।

दरअसल, हम आम जनता आराम से पत्रकार की धज्जियां उड़ा देते है। एक छोटी सी खबर के लिये सच्चाई दिखाने के लिये एक पत्रकार आंधी तूफान में बारिश में परिवार की फिक्र छोड़ कैसे संघर्ष करता है ये पता चला। हर समय मीडिया बिकाऊ नहीं होता ये धारणा मिटानी होगी और बिना सत्ता रूढ़ लोगों से डरे सच को सामने रख जनता का दिल जीतना होगा।

ब्रजेश जी कहते है कोई एक दिन में विजेता नहीं बनता। मैं पूरी कहानी नहीं बता सकती है। मैं चाहती हूं मेघा परमार की कहानी आप पुस्तक ख़रीद कर पढ़े। एक ग्रामीण लड़की सीहोर जिले के भोजपुर जिले के भोजपुर गांव में रहकर एवरेस्ट का सपना देखती है। मेघा की कहानी बताते बताते ब्रजेश जी बीच बीच में भावुक हो जाते हैं। पुस्तक को दो खंड़ो में बांटा है। पहले खंड में उनका संघर्ष है। दूसरे खंड में ख्वाब पूरा होने के बाद की बातें है।

तो चलिये पहले खंड से शुरू करते है। 'मैं वापस नहीं जाऊंगी' सिर्फ 700 मीटर की दूरी पर जब शेरपा कहता है अब ऑक्सीजन खत्म होने वाली है। जिंदगी बड़ी है फिर आ जायेंगे। वो दृढ़ता से कहती है, मैं मध्यप्रदेश की पहली लड़की होऊँगी जो सबसे ऊँची चोटी पर पहुँचूंगी। (हालांकि मुझे इसका भी अफसोस है कि जितनी प्रसिद्धि मेघा को हासिल होनी चाहिये उतनी नहीं मिली) ब्रजेश जी को सलाम जो ये काम उन्होंने किया अपनी तरफ से। मेरी भी कोशिश है कि ऐसी कर्मठ लड़की दुनिया के सामने आयें जिसने मिसाल कायम की।

गरीब किसान की लड़की ने घूम घूम के लाखों रूपये इकट्ठे किये। चोटी पर पहुँचते ही उसे याद आता है अपना गांव, पिताजी भाई, झूला। खुशी के मारे लौटते समय पैर लड़खड़ा रहे थे। ऑक्सीजन लगभग खत्म थी।

बचपन से मेघा की अपनी दोनों भाईयों से प्रतियोगिता रहती थी कि लड़के ऐसा क्या कर सकते है जो मैं नहीं कर सकती मेघा का गांव परमारों का गांव कहलाता है वे सिर्फ खाने लायक फसल ही निकाल पाते थे। खतरों से खोलना मेघा का शौक बन गया।

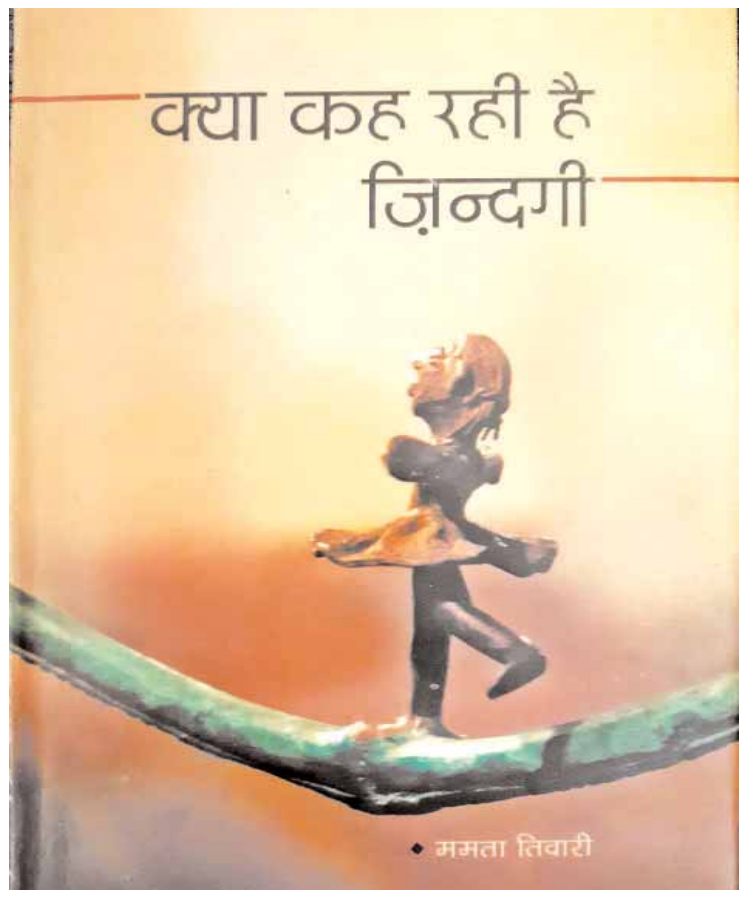

मेघा उस गांव से थी जहां औरते घूंघट डाल, गर्भवती स्त्री, गाय-भैंस के कोठे में डिलीवरी, लड़की होने पर कोसना। भाई बहन का भेदभाव मेघा ने खूब सहा। उसे हमेशा पुरानी किताबें, पुरानी फ्राक, बिना घी लगी रोटी ही मिली। अचानक एक दिन उसका मूल्य बढ़ता है वो खुश हो जाती है। उसकी शादी तय कर दी जाती है बहुत छोटेपन में। गावं में पांचवी तक स्कूल था। अब वो नाना के पास सुलेन पढ़ने भेज दी गई। वहां उसे घर के पूरे काम करने पड़ते थे। अब उसे सुलेन से फिरोदिया भेज दिया गया। सब को काम वाली की जरूरत थी। तब तक मेघा हाई स्कूल में आ गई। उसे बोर्नविटा बहुत पसंद था पर कभी मिला नहीं। आजकल खिलाड़ियों को कितना कुछ मिलता है। माहवारी में पुराने कपड़े में राख भर के दी जाती थी। खाना कम देते थे। उम्र बढ़ने के साथ लोगों की गंदी नजरें भी पड़ी।

मां साथ नहीं थी तो अकेले निपटना सीखा। उसका इंटरमीडिएट हो गया तो शादी की बात चली। माँ ने कहा, दामाद की नौकरी लग गई क्या जो अभी शादी कर दे? शादी कुछ साल टल गई। अब जिद करके मेघा भाई के पास सीहोर आ गई और बीसीए में एडमिशन हो गया। मेघा का मन भोपाल भागने को करता। धीरे-धीरे कॉलेज में मन लग गया। बाद में पता चला उसे वहां इसलिये रहने दिया गया कि उसके भाईयों को खाना मिल सके। मेघा का मन इसी सोच में लगा रहता वो ऐसा क्या बेमिसाल करें कि उसे प्रसिद्धि मिले उसने एनएसएस कैंप ज्वाइन कर लिया। बिना घर में बतायें जबलपुर कैंप भी गई फिर। उसे गुवाहाटी के लिये चुना गया। इस ट्रिप ने मेघा की ज़िंदगी बदल दी।

इसके बाद उसके बहुत दोस्त व सलाहकार थे। साथ में थे मैडल सर्टिफिकेट और पिताजी की झिड़कियां। ग्रेजुऐशन खत्म होते ही मेघा ने मास्टर ऑफ सोशल वर्क भोपाल में एडमिशन लिया। सुबह भाइयों का खाना बनाकर भोपाल पढ़ने आती। पैसों की तंगी हुई तो एक चैनल में साढ़े तीन हजार की नौकरी कर ली। भोपाल में एवरेस्ट पर्वतारोही मिले और मेघा का हौसला बुलंद हो गया। उसके बाद की कहानी एवरेस्ट पर चढ़ाई की है। वो संघर्ष आपको ही पढ़ना होगा। चंदा इकठ्ठा करने में बहुत वक्त लगा लोगों ने गंदे प्रपोजल भी रखे। घर वालों के विरोध से मेघा टूटने सी लगी। आत्महत्या का विचार भी आया। मनाली से मांउटोंनयरिंग में एडमिशन लेने गई। वहां एक्सीडेंट हो गया। किसी ने मदद नहीं की। एक तरीके से विकलांग अवस्था में लंबा वक्त बिताया।

फिर शुरू हुई ट्रेनिंग एवरेस्ट पर चढ़ने की। आख़िर में मां बाप के हौसले की ज़रूरत ने उसे घर फोन कराया और हौसला मिला भी। 'चक दे इंडिया' और 'मांझी द माउंटमैन' मूवी देख देख कर खुद का हौसला बढ़ाती रही।

मोटिवेशनल मूवी कितना हौसला बढ़ाती है ये घायल मेघा ने सीखा और मुझे लगता है फिल्म इंडस्ट्री को मेघा की बायोपिक बनाने में देर नहीं करनी चाहिये। मेघा की हिम्मत, बेबाकी, साफगोई, सच्चाई उसका हथियार है। लेखक ब्रजेश राजपूत व मेघा ने बिना समाज और परिवार से डरे जो स्त्री व्यथा को स्पष्ट किया है वो बताता है कि एक औरत का आगे बढ़ना कितना संघर्षशील है। ब्रजेश जी ने मेघा की कथा को उसी की जबानी पेश किया। नये हौसले के साथ मैं मेघा से पूछना चाहती हूं और अब क्या कर रही है जिंदगी।

//भाषान्तर//

अनुवाद मणि मोहन

भाषान्तर में आज विख्यात ब्रिटिश कवि टेड ह्यूज़ की एक कविता का अनुवाद।

कौए का पतन

जब कौआ सफ़ेद था तब उसे लगा कि
सूर्य बहुत अधिक सफ़ेद था।
उसनें तय किया कि सूर्य में सफेदी कुछ ज़्यादा ही
चमक रही है,
उसने सूर्य पर आक्रमण कर उसे पराजित करना तय किया।

उसने अपनी पूरी शक्ति और गुस्से को बटोरा।
उसने अपने तने हुए जबड़ों के साथ
सूर्य के केंद्र की तरफ अपनी चोंच से निशाना साधा।

खुद को केंद्र में रखकर वह खिलखिलाया
और आक्रमण कर दिया।

उसकी इस लडाई की चिल्ल पों देख -सुनकर
पेड़ अचानक बूढ़े होने लगे,
छायाएँ शिथिल होने लगीं।

परन्तु सूर्य चमकता रहा -
वह और चमकदार होने लगा और कौआ वापिस लौटा
झुलसकर एकदम काला होकर।

उसने अपना मुँह खोला
पर यह क्या - एकदम काला।

'ओह वहाँ ऊपर' उसने कहने की कोशिश की,
'जहां सफ़ेद काला है और काला सफ़ेद है जहां,
मैं विजयी हुआ'।

अविनाश अग्निहोत्री

परछाई

और बता कैसी चल रही है जिंदगी, सालों बाद अपनी सहेली अवनी से एक कार्यक्रम में मिली सलोनी ने चहकते हुए पूछा।

सब ठीक है, पहले पति की सेवा में थे।और अब बेटा मेडिकल की पढ़ाई कर रहा है।मेरा तो सारा समय इन दोनो की ही चाकरी में गुजर रहा है।

उसने मुस्कुराते हुए कहा। पर जब हमने साथ साथ अपना एम बी ए पूरा किया था। तब तो तू कोई बड़ा बिजनेस करके अपना एक वजूद बनाना चाहती थी। उसका क्या हुआ।

सलोनी ने प्रश्नभरी नजर अवनी पर डालते हुए उससे पूछा। शादी के बाद से अबतक मैं बस एक परछाई हूं और परछाई का अपना कहां कोई वजूद....

तब अवनी नजरे झुकाए भर्राए स्वर में उससे बस इतना ही कह पाई।

अटकलों और यादों की दुनिया में...!

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

जब प्रिंस एंड्रयू नवंबर 2019 में न्यूज नाइट पर दिखाई दिए तो उन्होंने संदेह दूर कर दिया कि सच्चाई कल्पना से अजीब है। जिसने भी इंटरव्यू देखा, भूल नहीं सकता। जब ड्यूक ऑफ यॉर्क को जेफरी एपस्टीन के साथ करीबी संबंधों के बारे में बात करने के लिए बीबीसी बुलाया गया तो उन्होंने कई चौंकाने वाले दावे किए, उनमें से यह भी था कि बाल यौन अपराधी के साथ संबंध बनाए रखना 'सही काम' था। वोकिंग में पिज्जा एक्सप्रेस में बच्चों की पार्टी और उस समय पसीना बहाने की उसकी कूवत की कमी पर भी बहाना था।

नेटफ्लिक्स पर ताजा फिल्म 'स्कूप' एमिली मैटलिस के प्रिंस एंड्रयू के साथ 2019 'बीबीसी न्यूजनाइट' इंटरव्यू पर

है, जिसमें उन्हें यौन तस्कर और दुर्व्यवहार करने वाले जेफरी एपस्टीन के साथ दोस्ती के बारे में चुनौती दी गई है। राजकुमार का काम इतना शर्मनाक था कि उन्हें उपाधियां छोड़नी पड़ीं और काम से पीछे हटना पड़ा, यह देखते हुए कि वह अभी भी प्रिंस एंड्रयू के नाम से जाने जाते हैं और अभी भी शाही अवसरों पर बिना पछतावे के शामिल होते हैं। निर्देशक फिलिप मार्टिन ने कहा है कि 'स्कूप' 'अटकलों और अलग-अलग यादों की दुनिया' में हम कैसे फैसले लेते हैं, पता लगता है, लेकिन खतरा यह है कि इतिहास की सांप-सीढ़ी याद में ढोंग दिखा कर अपने पक्ष को मजबूत कर कथा को घुमा देगी। कोरोना की पहली लहर (2020) को ढाई साल बाद स्काई मिनिसरीज दिस इंग्लैंड में दिखाया गया था, जिसमें केनेथ ब्रानघ ने बुरी विग में बोरिस जॉनसन की भूमिका निभाई थी। इस बीच 'अगाथा क्रिस्टी' मानहानि का मुकदमा खत्म होने के केवल पांच महीने बाद ही चैनल-4 कोर्ट रूम ड्रामा बन गया, लेकिन जब समाचार और मनोरंजन एक-दूसरे से इतना जुड़ जाते हैं तो क्या हम इन घटनाओं के दुनिया पर असर को भूल जाने का जोखिम उठाते हैं?

ब्रेक्सिट : द अनसिविल वॉर (2019) यूरोपीय संघ छोड़ने के लिए 2016 के अभियान का ढोंग करने वाली ब्लैक कॉमेडी, जिसमें बेनेडिक्ट कंबरबैच ने डोमिनिक कमिंग्स का अभिनय किया था। समीक्षकों ने 'बोरिंग बिट्स के बिना ब्रेक्सिट' की तारीफ की थी। दिखाया गया सत्य भी बेहतर हो सकता है। महामारी जैसे अदृश्य और निराकार खतरे पर भी लगाम नहीं लगाई जा सकती, लेकिन हाल के इतिहास को समय से पहले 'देखा' मान सकते हैं। हम टीवी के लिए पहले से कहीं ज्यादा तैयार हो गए हैं तो यह सवाल है- तस्वीर कैसे बिगाड़ी जा रही है?